Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَيٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :208)

अनुवाद: और लोगो जो ईमान लाए हो सब के सब अल्लाह तआला की इताअत के मार्ग में शामिल हो जाओ और शैतान के कदमों के नीचे न चलो शैतान तुम्हारा खुला खुला शत्रु है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 29

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

5 ज़विल कअदा 1439 हिजरी कमरी 19 वफा 1397 हिजरी शमसी 19 जुलाई 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

हमारा ख़ुदा तो अगण्य चमत्कारों वाला है, पर वे ही देख पाते हैं जो पूर्ण सच्चाई और आस्था से उसी के हो गए हैं। हमारा परमानन्द हमारा ख़ुदा है क्योंकि हमने इसका अनुभव किया है। हर प्रकार का सौंदर्य उसमें विद्यमान है। यह धन लेने योग्य है यद्यपि कि जीवन देकर प्राप्त हो, यह रत्न ख़रीदने योग्य है यद्यपि समस्त अस्तित्व खोकर प्राप्त हो ।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

उस मनुष्य की दुआ कैसे स्वीकार हो सकती है जो बड़ी बड़ी विपत्तियों को प्रकृति के नियम के विरुद्ध समझता है। ऐसा मनुष्य ख़ुदा के समक्ष दुआ हेतु खड़े होने का साहस कैसे कर सकता है जो ख़ुदा को प्रत्येक वस्तु पर पूर्ण अधिकार रखने वाला एवं सर्वशक्ति सम्पन्न नहीं समझता। पर हे सौभाग्यशाली मनुष्य ! तू ऐसा मत कर, तेरा ख़ुदा तो वह है जिसने अगणित नक्षत्रों को आकाश में बिना किसी स्तम्भ के लटका दिया, जिसने धरती और आकाश को कुछ न होते हुए उत्पन्न किया। क्या तू ऐसा विचार रखता है कि वह तेरे कार्य करने में असमर्थ रहेगा तेरे ही विचार तुझे वंचित कर सकते हैं। हमारा ख़ुदा तो अगण्य चमत्कारों वाला है, पर वे ही देख पाते हैं जो पूर्ण सच्चाई और आस्था से उसी के हो गए हैं। वह ऐसे मनुष्यों पर अपने अलौकिक चमत्कार प्रदर्शित नहीं करता जो उसकी शक्तियों पर विश्वास नहीं करते और उसके सच्चे और परम भक्त नहीं। कितना दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जिसे अंत तक यह ज्ञात नहीं कि उसका ख़ुदा है जो समस्त शक्तियों से परिपूर्ण है। हमारा स्वर्ग हमारा ख़ुदा है। हमारा परमानन्द हमारा ख़ुदा है क्योंकि हमने इसका अनुभव किया है। हर प्रकार का सौंदर्य उसमें विद्यमान है। यह धन लेने योग्य है यद्यपि कि जीवन देकर प्राप्त हो, यह रत्न ख़रीदने योग्य है यद्यपि समस्त अस्तित्व खोकर प्राप्त हो। हे वंचित रहने वालो ! इस झरने की ओर दौड़ो कि यह तुम्हें सींचेगा। यह जीवन दायी झरना है जो तुम्हें सुरक्षित रखेगा। मैं क्या करूं और किस प्रकार इस शुभ संदेश को हृदयों तक पहुंचाऊं, किस ढपली से मैं बाज़ारों में मुनादी करूं कि तुम्हारा ख़ुदा यह है ताकि लोग सुन लें, किस औषधि से मैं उपचार करूं ताकि लोगों के कान खुलें।

यदि तुम ख़ुदा के हो जाओगे तो निसंदेह ख़ुदा तुम्हारा होगा। तुम सोए हुए होगे और ख़ुदा तुम्हारे लिए जागेगा, तुम शत्रु से बेख़बर होगे पर ख़ुदा उसे देखेगा और उसके प्रयत्नों को विफ़ल करेगा। तुम्हें अभी तक ज्ञात नहीं कि तुम्हारे ख़ुदा में कौन-कौन सी शक्तियां विद्यमान हैं। यदि तुम्हें ज्ञात होता तो तुम पर कोई दिन ऐसा न आता कि तुम संसार के लिए दुखी होते। एक मनुष्य जो अपने पास एक ख़ज़ाना रखता है क्या वह एक पैसे के व्यर्थ हो जाने से विलाप करता है, चीख़ें मारता है और मरने लगता है। यदि तुम को उस ख़ज़ाने की सूचना होती कि तुम्हारा ख़ुदा प्रत्येक आवश्यकता के अवसर पर काम आने वाला है, तो तुम सांसारिक वस्तुओं के लिए इतने आपे से बाहर न होते। ख़ुदा एक प्यारा ख़ज़ाना है उसकी क़द्र करो कि वह तुम्हारे प्रत्येक पग पर तुम्हारी सहायता करता है, उसके बिना तुम्हारा कोई अस्तित्व नहीं, तुम्हारे साधन, प्रयास और प्रयत्न महत्त्वहीन हैं। अन्य क़ौमों का अनुकरण मत करो जो पूर्णरूपेण सांसारिक साधनों पर निर्भर हैं। जैसे सांप मिट्टी खाता है इसी प्रकार वे संसार के क्षुद्र साधनों पर आश्रित हो गए, जैसे गिद्ध और कुत्ते मरे हुए जानवरों को खाते हैं। इन्होंने भी मुरदा जानवरों पर दांत मारे। वे ख़ुदा से बहुत दूर हो गए, उन्होंने मनुष्यों की उपासना की, सुअर खाया और मदिरा का पानी की भांति सेवन किया, भौतिक साधनों पर गिरे और ख़ुदा से शक्ति न मांगने के कारण वह मर गए। उनमें से आध्यात्मिकता इस प्रकार निकल गई जिस प्रकार घोंसले से पक्षी उड़ जाता है। उनके अन्दर सांसारिक साधनों की उपासना का एक कोढ़ है जिसने उनके सभी आंतरिक अवयवों को काट दिया है। अत: तुम उस कोढ़ से डरो। मैं तुम्हें सांसारिक साधनों से एक सीमा में रहते हुए लाभ उठाने से नहीं रोकता अपितु तुम्हें इस बात से रोकता हूं कि तुम अन्य क़ौमों की भांति इन भौतिक साधनों के दास बन जाओ और उस ख़ुदा को भुला दो जो उन साधनों को भी पैदा करता है। अगर तुम्हारे नेत्र हैं तो तुम्हें दिखाई दे जाए कि ख़ुदा के अतिरिक्त सब कुछ तुच्छ है। तुम उसकी आज्ञा के बिना अपने हाथों को न तो फैला सकते हो न समेट सकते हो। एक आध्यात्मिक मुर्दा इस बात की हंसी उड़ाएगा, यदि वह वास्तव में मर गया होता तो उसके लिए अति उत्तम था। सावधान ! तुम अन्य कौमों को देखकर उनका अनुकरण मत करो कि उन्होंने भौतिक लक्ष्यों की प्राप्ति में बहुत उन्नति कर ली है, इसलिए हम भी उन्हीं के पद चिन्हों पर चलें। सुनो और समझो कि वे उस ख़ुदा से लापरवाह और अपरिचित हैं, जो तुम्हें अपनी ओर बुलाता है। उनका ख़ुदा क्या है ? मात्र एक विवश इन्सान । इसलिए वे लापरवाही में पड़े हैं। मैं तुम्हें दुनिया कमाने और व्यापार आदि करने से नहीं रोकता, पर तुम उन लोगों के अधीन मत हो जिन्होंने संसार को ही सब कुछ समझ लिया है। तुम्हारे प्रत्येक कार्य में चाहे वह दुनिया का हो या दीन (धर्म) का उसको करने में ख़ुदा से हर समय सामर्थ्य मांगते रहो ; न केवल शुष्क होठों से बल्कि तुम्हारी सचमुच यह आस्था हो कि प्रत्येक भलाई आकाश से ही उतरती है। तुम सच्चे उसी समय बनोगे जब तुम प्रत्येक संकट के समय किसी भी प्रयास से पूर्व सबसे विरक्त होकर ख़ुदा की चौखट पर गिरो कि हे ख़ुदा ! मेरे समक्ष यह समस्या है, अपनी विशेष अनुकम्पा से इस समस्या का समाधान कर। तब ख़ुदा के फ़रिश्ते तुम्हारी सहायता करेंगे और अदृश्य शक्ति की ओर से कोई मार्ग तुम्हारे लिए प्रशस्त किया जाएगा। अपने प्राणों पर दया करो। जो लोग ख़ुदा से अपने समस्त संबंध समाप्त कर चुके हैं और तन-मन से पूर्णरूपेण संसार पर निर्भर हैं, यहां तक कि शक्ति और सामर्थ्य मांगने के लिए अपने मुख से इन्शाअल्लाह भी नहीं कहते, उनका अनुसरण मत करो। ख़ुदा तुम्हारे नेत्र खोले ताकि तुम्हें ज्ञात हो कि तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे समस्त प्रयासों का आधारभूत स्तम्भ है ।यदि स्तम्भ गिर जाए तो क्या कड़ियां अपनी छत पर टिकी रह सकती हैं ? कदापि नहीं, बल्कि एक बार में ही गिर पड़ेंगी और संभव है कि उनसे कई मौतें भी हो जाएं । इसी प्रकार तुम्हारे प्रयास भी ख़ुदा की सहायता के बिना सफल नहीं हो सकते । यदि तुम उससे सहायता नहीं मांगोगे, उससे शक्ति मांगना अपनी दिनचर्या नहीं बनाओगे तो तुम्हें कोई सफलता प्राप्त नहीं होगी । अंतत: बड़ी हसरत के साथ मरोगे ।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 9 से 11)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-1)

4 मई प्रतिदिन बुधवार लंदन से प्रस्थान और इसी दिन डेनमार्क में पहुंचना। मस्जिद नुसरत जहां तशरीफ़ पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का शानदार स्वागत, बच्चों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किए।

मस्जिद नुसरत जहाँ के साथ नए बनाए गए मिशन हाउस, पुस्तकालय ,कार्यालयों, नमाज़ हाल आदि का निरीक्षण और निर्देश। Hvidovre क्षेत्र के नगरपालिका के मेयर और उनके चार कौंसलर का हुज़ूर अनवर से मुलाकात।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की तरफ से मेयर और पार्षद के सवालों की हिक्मत वाले उत्तर, उन्हें इस्लाम अहमदियत की तब्लीग़ ,शांति की स्थापना और अन्य महत्तवपूर्ण बातों पर नसीहतें। डेनमार्क की धरती से हुज़ूर अनवर का दूसरा ख़ुत्बा जुम्अः जो सारी दुनिया में एम टी ए के माध्यम से सीधा प्रसारित हुआ। डेनमार्क में पधारने की प्रिंट तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया में ख़बरें। पारिवारिक मुलाकातें।

यह समय है कि हम शांति की स्थापना करें।

अगर हम इस सिद्धांत पर कायम हों कि हम सब इंसान हैं और हम ने मानवीय मूल्यों की स्थापना करनी है और एक दूसरे का सम्मान करना है तो तब दुनिया में शांति हो सकती है।

अहमदियों ने चूंकि इस युग में आने वाले मसीह अलैहिस्सलाम को माना है इसलिए उनके लिए यह बात अनिवार्य है कि वह शांतिपूर्ण हों और प्रत्येक के साथ प्यार और मुहब्बत से पेश आने वाले हों और दूसरों का ध्यान रखने वाले हों ।

इस्लाम कहता है कि धर्म में बाध्यता नहीं धर्म का मामला ख़ुदा तआला के हाथ में है, धर्म के हवाले से उसी ने ही तय करना है, इंसान को चाहिए कि एक दूसरे का सम्मान करे, मानवीय मूल्य महत्त्वपूर्ण हैं उनका ख्याल रखें, धर्म का मामला ख़ुदा तआला के हाथ में रहने दें, अगर धर्मों वाले एक दूसरे को मारेंगे, कत्ल डालेंगे तो फिर कौन किस धर्म पर चलेगा, फिर धर्म का क्या लाभ? एक दूसरे को मारते हुए सब मर जाएंगे।

यह बात सही है कि धार्मिक स्वतंत्रता है, राय की स्वतंत्रता है, तब्लीग़ की , संदेश पहुंचाने की स्वतंत्रता है। लेकिन अगर यह स्वतंत्रता दूसरों की भावनाओं को प्रताड़ित कर रही है, तो इस पर कुछ सीमा लगानी होगी। कोई तरीका निकालना पड़ेगा तब ही शांति, सहिष्णुता और भाईचारे की स्थापना की जा सकती है।

पोप ने कहा कि अगर कोई मेरा अच्छा दोस्त मां के ख़िलाफ गाली दे, तो उसे मुक्का खाने के लिए तैयार रहना चाहिए। ईसाईयों को पोप की बात सुननी चाहिए। पोप लोगों की भावनाओं की रक्षा करने की कोशिश कर रहा है। मैं समझता हूं कि वह इस पहलू से वास्तविक ईसाई धर्म की शिक्षाओं का पालन कर रहा है।

पाकिस्तान में हमारे ख़िलाफ नियमित कानून बना हुआ है, कुछ देशों में कानून तो नहीं लेकिन हमें अपने अधिकारों से वंचित किया जाता है और हम खुलकर तब्लीग़ नहीं कर सकते, चुनौती तो हर जगह हैं, जितनी बड़ी योजना है उतनी ही अधिक समस्या हैं जिनका सामना करना पड़ता है लेकिन इन सब बातों के बावजूद हमारा विकास हो रहा है, हमारा संदेश ऐसा है कि हर साल लाखों लोग अहमदियत यानी वास्तविक इस्लाम में प्रवेश कर रहे हैं

Hvidovre के मेयर और पार्षद की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग और उनके प्रश्नों पर हुज़ूर अनवर के ईमान वर्धक उत्तर;

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

दिनांक 4 मई 2016 (बुधवार)

आज हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ सेकंड नेवियाई देशों डेनमार्क और स्वीडन के सफर के लिए निकले।

वर्ष 2005 ई में जर्मनी का दौरा पूरा कर ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने 6 सितम्बर दिनांक मंगलवार से 11 सितम्बर दिनांक इतवार 2005 ई डेनमार्क का पहला दौरा किया था।

वर्ष 2011 ई में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ जर्मनी यात्रा में अपने हमबरग HAMBURG प्रवास के दौरान 9 अक्टूबर 2011 ई को केवल एक दिन के लिए डेनमार्क के उत्तर में बसे शहर NAKSKOV तशरीफ़ लाए थे और अन्य विभिन्न कार्यक्रमों के अलावा यहां स्थित अलबानियन और KOSOVO के अहमदी दोस्तों और परिवार के सदस्यों ने मुलाकात का सौभाग्य पाया था ।

डेनमार्क के इस नियमित दूसरे दौरे की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि " मस्जिद नुसरत जहां" कोपेनहेगन के साथ एक नया मिशन हाऊस, कार्यालयों, व्यापक हाल्स, पुस्तकालय और आवासीय भाग, गेस्ट हाउस आदि निर्माण हुए हैं और एक पूरा नया परिसर बनाया गया है, जिस का उद्घाटन इस सफर में होगा।

डेनमार्क के इस बरकत वाले सफर का आरम्भ गुरुवार, 2016 को 4 बजे शुरू हुआ। दोपहर साढ़े बारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने आवास से बाहर आए। अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहने के लिए मस्जिद फज़ल लंदन के सेहन में जमा हुए थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और अपना हाथ बढ़ा कर सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और एयरपोर्ट लिए प्रस्थान किया।

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जुम्अः के महत्त्व का उल्लेख करते हुए एक अवसर पर फरमाया कि इसमें एक ऐसी घड़ी आती है जब मुसलमान को ऐसा समय मिले और वह खड़ा नमाज़ पढ़ रहा हो तो जो दुआ मांगे स्वीकार की जाती है या जो भलाई और ख़ैर मांगता है, अल्लाह तआला प्रदान करता है। जुम्अः का ख़ुत्बा भी नमाज़ का हिस्सा है इसलिए यह समय भी इस घड़ी में शामिल है जिस में वह घड़ी शामिल है।

जुम्अः के दिन का एक विशेष मजबूरी के प्रत्येक वयस्क पुरुष को इसे पढ़ना आवश्यक करार दिया गया है। नमाज़ में हर कोई अपनी सोच और ज़रूरतों के अनुसार दुआ करता है, और कुछ ऐसे हैं जो नमाज़ भी पढ़ लेते हैं और विशेष दुआ की तहरीक उन में पैदा नहीं होती। बस नमाज़ पढ़ ली, शब्दों को दुहरा लिया और बहुत हो गया। और उन को दुआ के महत्त्व का पच नहीं लगता इसलिए आज इस रमज़ान के अन्तिम जुम्अः में मैंने सोचा कि कुछ दुआएं पढ़ूं तोाकि जिन को अधिक महत्त्व नहीं उन क भी पता चल जाए। दुआं क्या हैं। और सामूहिक रूप से हम अल्लाह तआला से समक्ष अपनी दुआएं तथा विनय प्रस्तुत करें। और नमाज़ में सामूहिक रूप से फिर इन दुआओं के स्वीकार होने की दुआ भी मांगें। इन दुआओं में कुरआन मजीद की कुछ दुआएं मैंमे ली हैं. आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुछ दुआएं हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हैं और कुछ समान्य दुआएं भी हैं

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 15 जून 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जुम्अः के महत्त्व का उल्लेख करते हुए एक अवसर पर फरमाया कि इसमें एक ऐसी घड़ी आती है जब मुसलमान को ऐसा समय मिले और वह खड़ा नमाज़ पढ़ रहा हो तो जो दुआ मांगे स्वीकार की जाती है या जो भलाई और ख़ैर मांगता है, अल्लाह तआला प्रदान करता है, इसकी व्याख्या में, कुछ लोग यह भी कहते हैं कि जुम्अः का ख़ुत्बा भी नमाज़ का हिस्सा है इसलिए यह समय भी इस घड़ी में शामिल है, लेकिन जुम्अः के दिन का एक विशेष मजबूरी के प्रत्येक वयस्क पुरुष को इसे पढ़ना आवश्यक करार दिया गया है। नमाज़ में हर कोई अपनी सोच और ज़रूरतों के अनुसार दुआ करता है, और कुछ ऐसे हैं जो नमाज़ भी पढ़ लेते हैं और विशेष दुआ की तहरीक उन में पैदा नहीं होती। बस नमाज़ पढ़ ली, शब्दों को दुहरा लिया और बहुत हो गया। और उन को दुआ के महत्त्व का पच नहीं लगता इसलिए आज इस रमज़ान के अन्तिम जुम्अः में मैंने सोचा कि कुछ दुआएं पढ़ूं तोाकि जिन को अधिक महत्त्व नहीं उन क भी पता चल जाए। दुआं क्या हैं। और सामूहिक रूप से हम अल्लाह तआला से समक्ष अपनी दुआएं तथा विनय प्रस्तुत करें। और नमाज़ में सामूहिक रूप से फिर इन दुआओं के स्वीकार होने की दुआ भी मांगें। इन दुआओं में कुरआन मजीद की कुछ दुआएं मैंमे ली हैं. आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुछ दुआएं हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हैं और कुछ समान्य दुआएं भी हैं जो मैं पढ़ूंगा जिन को याद है वे दिल में दुहराते रहें और जो मेरे साथ दुहरा सकते हैं बेशक दुहराएं और दिल में हर दुआ के बाद आमीन भी कहते रहें। अल्लाह तआला हमारी दुआं कुबूल फरमाए।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ۔

सब से पहले कुरआन की दुआएं हैं।

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ (अलबक्र: 202)

हे हमारे रब्ब हमें दुनिया में भी भलाई प्रदान कर और अख़रत में भी भलाई प्रदान कर और हमें आग के अज़ाब से बचा।

رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ (अल-आराफ 127)

हे हमारे रब्ब, हमें धैर्य दे और हमें मुस्लिम होने की स्थिति में वफात दे।

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ

(अल्माइद: 115)

हे हमारे अल्लाह हमारे रब्ब हम पर आसमान से नेअमतों का दस्तरख़वान उतार जो हमारे अव्वलीन (पहलों) और हमारे आख़ॅरीन के लिए ईद हो जाए और तेरी तरफ से एक महान निशान के रूप से हो। और हमें अपना रिज़्क प्रदान कर और तू रिज़्क देने वालों में सब से बेहतर है।

رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۔ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ كَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ

(आले इम्रान 194)

हे हमारे रब्ब हम ने एक आवाज़ देने वाले को सुना जो ईमान की आवाज़ दे रहा था कि अपने रब्ब पर ईमान ले आओ अत: हम ईमान ले आए। हे हमारे रब्ब हमारे गुनाह क्षमा कर दे और हम से बुराइयों को दूर कर दे और हमें नेकियों के साथ मौत दे।

رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ

(आले इम्रान 54)

हे हमारे रब्ब हम उस पर ईमान ले आए जो तूने उतारा और हम ने रसूल की पैरवी की। अत: हमें हक की गवाही देने वालों में से लिख दे।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ

(आले इम्रान 54)

हे हमारे रब्ब हमारे दिलों को टेड़ा न होने दे इस के बाद के तू हमें हिदायत दे चुका है और हमें अपनी रहमत प्रदान कर। निसन्देह तू ही है जो बहुत प्रदान करने वाला है।

رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ

(आले इम्रान 54)

हे हमारे रब्ब मुझे अपनी तरफ से पवित्र नस्ल प्रदान कर निसन्देह तू बहुत प्रदान करने वाला है।

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا

(अल्फुर्कान 75)

हे हमारे रब्ब हमें अपने जीवन साथियों और अपनी औलाद से ठंडक प्रदान कर और हमें मुत्तिकयों का इमाम बना दे।

رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۔ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

(अलअहकाफ 16)

हे मेरे रब्ब मुझे तौफीक प्रदान कर के मैं तेरी इस नेअमत का शुक्रिया अदा कर सकूं जो तुझ ने मुझ पर और मेरे माता पिता पर की और इस प्रकार के नेक कर्म करूं जिन से तू राज़ी हो जाए और मेरे लिए मेरी नस्ल का सुधार कर दे। निसन्देह मैं तेरी तरफ ही लौटूंगा और निसन्देह मैं आज्ञाकारों में से हूं।

رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ

(अस्साफ्फात 101)

हे मेरे रब्ब मुझे सालेहीन में से (वारिस) प्रदान कर।

رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ

(अल्कसस 25)

हे मेरे रब्ब में प्रत्येक अच्छी चीज़ के लिए जो तू मेरी तरफ नाज़िल करे एक फकीर हूं। इस की इच्छा रखता हूं।

رَبِّ اَوْزِعْنِیْۤ اَنْ اَشْکُرَ نِعْمَتَکَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَعَلٰی وَالِدَیَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِیْ بِرَحْمَتِکَ فِیْ عِبَادِکَ الصّٰلِحِیْنَ

(अन्मल 20)

हे मेरे रब्ब मुझे तौफीक प्रदान कर कि मैं तेरी नेअमत का शुक्र अदा करूं जो तूने मुझ पर की और मेरे माता पिता पर की और इस प्रकार के नेक कर्म करूं जो तुझे पसन्द हों और तू मुझे अपनी रहमत से अपने नेक बन्दों में शामिल कर ले।

رَبِّ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّیٰطِیْنِ ۔ وَاَعُوْذُ بِکَ رَبِّ اَنْ یَّحْضُرُوْنِ

(अल्मोमेनूम 89-90)

और तू कह दे कि हे मेरे रब्ब मैं शैतान की शंकाओं से तेरी पनाह चाहता हूं और इस बात से तेरी पनाह में आता हूं कि हे मेरे रब्ब वे शंकाए मेरे निकट न आएं।

رَبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا

(ताहा 115)

हे मेरे रब्ब मेरे रब्ब मेरे ज्ञान को बढ़ा दे।

رَبِّ اشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ ۔ وَیَسِّرْ لِیْۤ اَمْرِیْ ۔ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِیْ ۔ یَفْقَهُوْا قَوْلِیْ

(ताहा 26-29)

हे मेरे रब्ब मेरा सीना मेरे लिए खोल दे और मेरा मामला मुझ पर आसान कर दे और मेरी ज़बान की गांठ को खोल दे ताकि वे मेरी बात समझ सकें।

رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْکَ رَحْمَةً وَّهَیِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا

(बनी इस्राईल 81)

हे मेरे रब्ब मुझे इस प्रकार दाख़िल के मेरा दाख़िल होना सच्चाई के साथ हो और मुझे इस प्रकार निकाल के मेरा निकलना सच्चाई के साथ हो और अपनी ओर से मेरे लिए ताकतवर मदद करने वाला प्रदान कर।

رَبِّ ارْحَمْهُمَا کَمَا رَبَّیٰنِیْ صَغِیْرًا

(बनी इस्राईल 25)

हे मेरे रब्ब इन दोनों पर(अर्थात मेरे माता पिता) पर रहम कर जिस तरह इन दोनों ने बचपन में मेरी तरिबयत की।

رَبِّ هَبْ لِیْ حُکْمًا وَّاَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ ۔ وَاجْعَلْ لِّیْ لِسَانَ صِدْقٍ فِی الْاٰخِرِیْنَ ۔ وَاجْعَلْنِیْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِیْمِ

(अश्शुअरा 84-86)

हे मेरे रब्ब मुझे हिक्मत प्रदान कर और मुझे नेक लोगों में शामिल कर और मेरे लिए आख़रीन में सच कहने वाली ज़बान प्रदान कर और मुझे नेअमतों वाली जन्नत के वारिसों में से बना।

رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ

(अल्कसस 17)

हे मेरा रब्ब निसन्देह मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया। अत: तू मुझे क्षमा कर दे।

رَبَّنَاۤ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

(अत्तहरीम 9)

हे मेरा रब्ब मेरे लिए मेरे नूर को पूर्ण कर दे और हमें क्षमा कर दे। निसन्देह तू प्रत्येक चीज़ पर जिसे तू चाहता है स्थायी कुदरत रखता है।

رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَیْرُ الرّٰحِمِیْنَ

(अल्मोमोनून 110)

हे हमारे रब्ब हम ईमान ले आए। अत: हमें क्षमा कर दे और हम पर रहम कर तू रहम करने वालों में सब से बेहतर है।

رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَکُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ

(अल्आराफ 24)

हे हमारे रब्ब हम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया अगर तूने माफ न किया और हम पर रहम न किया तो निसन्देह हम घाटा पाने वालों में से हो जाऐंगे।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ

(अल्आराफ 48)

हे हमारे रब्ब हमें ज़ालिम लोगों में से न बना।

رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ

(अल् अंबिया 90)

हे हमारे रब्ब हमें अकेला न छोड़ और तू सब वारिसों में से बेहतर है।

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِیَنِّیْ مَا یُوْعَدُوْنَ ۔ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِیْ فِی الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ

(अल्मोमिनून 94-95)

हे मेरे रब्ब अगर तू मुझे दिखा ही दे जिस से उन को डराया जाए(तो यह एक दुआ है) हे मेरे रब्ब अत: तू मुझे अत्याचारी क़ौम में से न बना।

رَبَّنَا وَسِعْتَ کُلَّ شَیْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِیْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِیْلَکَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِیْمِ ۔ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِیْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّیّٰتِهِمْ ۔ اِنَّکَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ ۔ وَقِهِمُ السَّیِّاٰتِ ۔ وَمَنْ تَقِ السَّیِّاٰتِ یَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ۔ وَذٰلِکَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ

(अल्मोमिन 8-9)

हे हमारे रब्ब तो प्रत्येक चीज़ पर रहमत और ज्ञान से व्याप्त है। अत: वे लोग जिन्होंने तौब: की और तेरी राह की पैरवी की उन को क्षमा कर दे और उन को जहन्नम के अज़ाब से बचा और हे हमारे रब्ब उन्हें स्थायी जन्नतोंमे दाख़िल कर जिन का तूने उन से वादा किया है और उन्हें भी जो उन के बाप दादा और उन के साथियों और उन की में से नेकी धारण करने वाले हैं। निसन्देह तू ही पूर्ण ग़लबा वाला और बहुत हिक्मत वाला है औ उन्हें बुराइयों से बचा और जिसे तूने इस बुराइयों के परिणाम से बचाया तूने उस पर रहम किया और यह बहुत बड़ी सफलता है।

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِیْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِیْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّکَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ

(अल्हश्र 11)

हे हमारे रब्ब हमें क्षमा कर दे और हमारे इन भाइयों को भी जो ईमान में हम पर प्राथमिकता ले गए और हमारे दिलों में उन लोगों के लिए जो ईमान लाए कोई द्वेष न रहने दे। हे हमारे रब्ब निसन्देह तू बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَیْتِیَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۔ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا تَبَارًا

(नूह 29)

हे मेरे रब्ब मुझे क्षमा कर दे और मेरे माता पिता को भी और उसे भी जो मोमिन होने की अवस्था में मेरे घर में दाख़िल हो और सब मोमिन मर्दों और सब मोमिन औरतों को और तो ज़लिमों को हलाकत से सिवा किसी चीज़ में मत बढ़ाना।

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰی رُسُلِکَ وَلَا تُخْزِنَا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ۔ اِنَّکَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ

(आले इम्रान 195)

हे हमारे रब्ब हमें वह वादा प्रदान कर जो तूने अपने रसूलूं पर हमारे लिए फर्ज़ कर दिया और हमें कयामत के दिन अपमानित न कर। निसन्देह तू वादा नहीं तोड़ता।

اَنْتَ وَلِیُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَیْرُ الْغَافِرِیْنَ

(अल्आराफ 156)

तू ही हमारा वली है अत: हमें माफ फरमा दे और हम पर रहम फरमा और तू बहुत क्षमा करने वाला है

رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۔ اِنَّ عَذَابَهَا کَانَ غَرَامًا

(अल्फुर्कान 66)

हे हमारे रब्ब हम से जहन्नुम का अज़ाब टाल दे। निसन्देह उस का अज़ाब चिमट जाने वाला है।

رَبَّنَاۤ اِنَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए। अत: हमारे गुनाह क्षमा कर दे और हमें आग के आज़ाब से बचा।

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ۔ رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ

(सूरह 41-42)

हे हमारे रब्ब मुझे नमाज़ स्थापित करने वाला बना और मेरी नस्लों को भी। हे हमारे रब्ब मेरी दुआ स्वीकार कर हे मेरे रब्ब मुझे क्षमा कर दे और मेरे माता पिता को भी और मोमिनों को भी जिस दिन तू हिसाब लेगा।

رَبِّ نَجِّنِیْ وَاَهْلِیْ مِمَّا یَعْمَلُوْنَ

(अश्शुअरा 170)

हे मेरे रब्ब मेरी क़ौम ने मुझे झुठला दिया अत: मेरे मध्य और उन के मध्य स्पष्ट फैसला कर दे और मुझे मुक्ति प्रदान कर और उन को भी जो मोमिनों में मेरे साथ हैं।

رَبِّ اِنَّ قَوْمِیْ کَذَّبُوْنِ۔ فَافْتَحْ بَیْنِیْ وَبَیْنَھُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِیْ وَمَنْ مَّعِیَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ

(अश्शुअरा 118-119)

हे मेरे रब्ब इस फसाद करने वाली क़ौम के विरुद्ध मेरी सहायता कर।

رَبِّ انْصُرْنِیْ عَلَی الْقَوْمِ الْمُفْسِدِیْنَ

(अन्कबूत 31)

मैं निसन्देह पराजति हूं अत: मेरी सहायता कर।

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِیْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا۔ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَیْنَآ اِصْرًا کَمَا حَمَلْتَہٗ عَلَی الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَۃَ لَنَا بِہٖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَآ اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَی الْقَوْمِ الْکٰفِرِیْنَ

(अल बकर: 287)

हे हमारे रब्ब हमारी पकड़ न कर कि अगर हम भूल जाएं या हम से कोई भूल हो जाए और हमारे रब्ब हम पर इस प्रकार का कोई बोझ न डाल जैसा हम से पहले लोगों पर उन के गुनाहों के परिणाम स्वरूप तूने डाला और हे हमारे रब्ब हम पर कोई इस प्रकार का बोझ न डाल जो हमारी ताकत से बढ़ कर हो और हमें माफ फरमा और हमें क्षमा कर तू ही हमारी संरक्षक है अत: हमें काफिर क़ौम के मुकाबला में सहायता प्रदान कर।

رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَیْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَی الْقَوْمِ الْکٰفِرِیْنَ

(अल- बकर: 251)

हे हमारे रब्ब हम पर धैर्य नाज़िल कर और हमारे कदमों रो दृढ़ता प्रदान कर और काफिर क़ौम के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِیْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَی الْقَوْمِ الْکٰفِرِیْنَ

(अले इम्रान 148)

हे हमारे रब्ब हमारे गुनाह क्षमा कर दे और अपने मामले में हमारी अधिकता भी और हमारे कदमों को दृढ़ता प्रदान कर और हमारी कफिर कौम के मुकाबला में सहायता कर।

رَبَّنَا افْتَحْ بَیْنَنَا وَبَیْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَیْرُ الْفَاتِحِیْنَ

(अल आराफ 90)

हे हमारे रब्ब हमारे और हमारी क़ौम के मध्य सच्चाई के साथ फैसला कर दे और तू फैसला करने वालों में सब से बेहतर है।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَۃً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِکَ مِنَ الْقَوْمِ الْکٰفِرِیْنَ

(यूनुस 86-87)

हे हमारे रब्ब हमें ज़ालिम लोगों के लिए परीक्षा न बना और हमें अपनी रहमत से काफिर लोगों से नजात प्रदान कर।

رَبِّ انْصُرْنِیْ بِمَا کَذَّبُوْنِ

(अलमोमेनून 40)

हे हमारे रब्ब मेरी सहायता कर क्योंकि उन्होंने हमें झुठला दिया।

رَبِّ ابْنِ لِیْ عِنْدَکَ بَیْتًا فِی الْجَنَّۃِ وَنَجِّنِیْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِہٖ وَنَجِّنِیْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ।

(अत्तहरीम 12)

हे मेरे रब्ब मेरे लिए अपनी जन्नत में एक घर बना दे और मुझे फिरऔन से और उसके कर्म से बचा ले और मुझे उन ज़ालिम लोगों से मुक्ति प्रदान कर।

अब कुछ हदीस की दुआएं रिवायत हैं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह दुआ रिवायत है। आप ने यह दुआ सिखाई

हे मेरे अल्लाह मेरी गुनाह क्षमा कर दे। और मेरे सब मामलों में मेरी अज्ञानता में और मेरी अधिकता की बुराई से मुझे बचा ले। और उस हानि तथा नुकसान से बचा ले जिसे तू मुझ से अधिक जानता है। हे अल्लाह मेरे कुसूर क्षमा कर दे। मेरे जान बोझ कर सा अपने आप मज़ाक में की गई सारी ग़लतियां माफ कर दे ये सब मेरे अन्दर मौजूद हैं। जो ग़लतियां मुझे से हो गईं और जो अभी नहीं हुईं और जो चोरी छुपे मुझ से हो रही हैं और जो स्पष्ट रूप से में ने कीं वे सब मुझे क्षमा कर दे । तू ही आगे बढ़ाने वाला और पीछे हटा देने वाला और तू ही प्रत्येक चीज़ पर सामर्थवान है

(सहीह बुख़ारी किताबुद्दअवात बाब दुआ हदीस 6398)

फिर आप की एक दुआ है।

اَللّٰھُمَّ لَکَ اَسْلَمْتُ وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ وَبِکَ اٰمَنْتُ وَاِلَیْکَ اَنَبْتُ وَبِکَ خَاصَمْتُ وَاِلَیْکَ حَاکَمْتُ فَاغْفِرْ لِیْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ۔

(सहीह बुख़ारी किताबुद्दअवात बाब अद्दुआ हदीस 6317)

हे मेरे अल्लाह मैं अपना आप तेरे सुपुर्द करता हूं तुझ पर भरोसा करता हूं और तुझ पर ईमान लाता हूं तेरी तरफ झुकता हूं और तेरी मदद के साथ सामने वाले से मुकाबला करता हूं और तेरे ही समक्ष अपनी मुकदमा प्रस्तुत करता हूं। तू मुझे मेरे अगले पिछले ज़ाहिर और छुपे हुए सब गुनाह माफ कर दे। तू ही सब से पहले और सब से अन्त में है और तेरे सिवा कोई उपास्य नहीं।

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُکَ وَاَنَا عَلَی عَھْدِکَ وَوَعْدِکَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَکَ بِنِعْمَتِکَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ لَکَ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّہٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ۔

(सहीह बुख़ारी किताबुद्दअवात बाब अफज़ल इस्तिग़फार हदीस 6306)

हे अल्लाह तू मेरा रब्ब है। तेरे सिवा कोई उपास्य नहीं है तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूं। मैं तेरे अहद और वादा पर कायम हूं जितनी मुझे ताकत है। मैं अपने कर्मों की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूं और अपने ऊपर तेरी नेअमतों का इकरार करता हूं। और अपने गुनाहों को भी स्वीकार करता हूं मुझे क्षमा कर दे। तेरे सिवा कोई गुनाहों को क्षमा करने वाला नहीं है।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ قَلْبٍ لَا یَخْشَعُ وَمِنْ دُعَآءٍ لَا یُسْمَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَا تَشْبَعُ وَمِنْ عِلْمٍ لَا یَنْفَعُ۔ اَعُوْذُبِکَ مِنْ ھٰؤُلَآءِ الْاَرْبَعِ۔

(सुनन अत्तिरमज़ी अबवाबुद्दअवात हदीस 3482)

हे अल्लाह मैं तुझ से इस प्रकार के दिल से पनाह चाहता हूं जिस में विनय और विनम्रता नहीं जो मकबूल न हों और इस प्रकार के नफस से जो कभी न भरे और इस प्रकार के ज्ञान से जो लाभ न दे। मैं इन चारों से तेरी पनाह चाहता हूं।

یَامُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِیْ عَلٰی دِیْنِکَ۔

(सुनन अत्तिरमज़ी अबवाबुल कदर हदीस 2140)

हे दिलों को फेरने वाले मेरे दिल को अपने धर्म पर दृढ़ रख।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ الْھُدٰی وَالتُّقٰی وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰی۔

(सुनन अत्तिरमज़ी अबवाबुल दावात हदीस 3489)

हे मेरे अल्लाह मैं तुझ से हिदायत तक्वा पवित्रता और ग़िना मांगता हूं।

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَجْعَلُکَ فِیْ نُحُوْرِھِمْ وَنَعُوْذُبِکَ مِنْ شُرُوْرِھِمْ۔

(सुनन अबू दाऊद हदीस 3490)

हम तुझे उन के सीनों में रखते हैं अर्थात तेरा रौब उन के सीनों में भर जाए और हम उन की बुराई से तेरी पनाह चाहते हैं।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ حُبَّکَ وَحُبَّ مَنْ یُّحِبُّکَ وَالْعَمَلَ الَّذِیْ یُبَلِّغُنِیْ حُبَّکَ۔ اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ حُبَّکَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ نَفْسِیْ وَاَھْلِیْ وَمِنَ الْمَآءِ الْبَارِدِ۔

(सुनन अत्तिरमज़ी अबवाबुल कदर हदीस 3490)

हे मेरे अल्लाह मैं तुझ से तेरी मुहब्बत मांगता हूं और उन लोगों की मुहब्बत जो तुझ से प्यार करते हैं और इस काम की मुहब्बत जो मुझे तेरी मुहब्बत तक पहुंचा दे। हे मेरे अल्लाह इस प्रकार कर कि तेरी मुहब्बत मुझे अपनी जान अपने माल अपनी नस्ल और ठण्डे पानी से भी अधिक प्यारी लगे और अच्छी लगे।

एक लम्बी दुआ है। हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह दुआ करते हुए सुना कि हे अल्लाह! मेरी तेरी विशेष रहमत को चाहने वाला हूं। जिस के द्वारा तू ने मेरे दिल को हिदायत प्रदान की है। मेरे काम बना दे और मेरे बिखरे हुए कामों को संवार दे। और मेरे बिछुड़े हुओं को मिला दे और मेरे सम्बन्ध रखने वालों को सम्मान दे। तू अपनी रहमत के द्वारा मेरे कर्म को साफ कर दे मुझे नेकी और हिदायत इल्हाम कर और जिन चीज़ों से मुझे मुहब्बत है वह मुझे मिल जाएं। हां इस प्रकार की रहमत जो मुझे प्रत्येक बुराई से बचा ले। और हे मेरे अल्लाह मुझे इस प्रकार का स्थायी ईमान और विश्वास भी प्रदान कर जिस के बाद कुफ्र नहीं होता। इस प्रकार की रहमत प्रदान कर जिस के द्वारा मुझे दुनिया तथा आख़रत में तेरी करामत का सम्मान प्राप्त हो जाए। हे मेरे अल्लाह मैं तुझ से प्रत्येक फैसले में सफलता चाहता हूं और शहीदों जैसी मेहमान नवाज़ी और नेकी का जीवन और शत्रुओं पर विजय और सहायता का इच्छुक हूं। मौला मैं तो अपनी ज़रूरत ले कर तेरे दरवाज़े पर हाज़िर हो गया हूं। अगर मेरी सोच त्रुटि पूर्ण और मेरी कोशिश कमज़ोर भी है तब भी मैं तेरी रहमत को ही मांगने वाला हूं। अत: हे सारे मामलों का फैसला करने वाले हे दिलों के को सांत्वना प्रदान करने वाले मैं तुझ से सवाल करता हूं कि जिस तरह बिफरे हुए समुन्द्रों में तू इंसान को बचा लेता है इसी प्रकार मुझे आग के अज़ाब से बचा ले। हलाकत की आवाज़

कब्र के फित्ना से मुझे पनाह दे। हे मेरे मौला जिस दुआ से मेरी सोच ग़लत है और जिस बात के लिए मैंने मांगने के लिए हाथ नहीं फैलाया। हां वह ख़ैर और भलाई जिस की मैं निय्यत भी नहीं बांध सका मगर तूने अपना सृष्टि में से किसी के साथ इस भलाई का वादा कर रखा है या अपने बन्दों में से किसी को तू वह भलाई प्रदान करने वाला है तो इस प्रकार की हर भलाई का मैं इच्छुक हूं और हे सब संसार के रब तेरी दया का वास्ता दे क्या मैं तुझ से वह भलाई मांगता हूं। हे अल्लाह , मजबूत और समृद्ध सम्बन्ध के मालिक, मैं क़यामत के दिन तुझ से शांति चाहता हूं, और मैं इस शाश्वत युग में स्वर्ग चाहता हूं। तेरे दरबार में हाज़री देने वाले नेक बन्दों के साथ और रकूअ और सज्दे करने वाले और वादों को पूरा करने वालों के साथ मैं। नि:सन्देह तू बहुत रहम और मुहब्बत करने वाला है। बेशक तू जो चाहता है करता है। हे मेरे अल्लाह मुझे इस प्रकार का हिदायत प्राप्त करने वाला बना दे जो न ख़ुद गुमराह होने वाले हों, न गुमराह करने वाले हों। तेरे प्यारों और दोस्ती के लिए हम सलामती का सन्देश हों। और तेरे दुश्मनों के लिए जंग का निशान। हम तरी मुहब्बत के सदका तेरे हर मुहब्बत करने वाले से और विरोधी और दुश्मनी करने वालों से तेरे लिए दुश्मनी करने रखने वाले हों। हे हमारे अल्लाह यह हमारी विनय पूर्ण दुआ है जिस का स्वीकार करना तेरे अधीन है। हे हमारे अल्लाह अत: यही दुआ मेरी सब मेहनत और कोशिश है और सब भरोसा तेरी ज़ात है। हे मेरे अल्लाह मेरे लिए मेरे दिल में नूर पैदा कर दे। मेरी कब्र को भी रौशन करे। मेरे आगे और मेरे पीछे भी नूर कर दे। और मेरे सुनने में भी नूर करे दे। और मेरे देखने में भी नूर कर दे। और मेरे बालों में भी नूर कर दे और मेरी चमड़ी को भी नूरानी कर दे। और मेरे गोश्त और मेरे ख़ून में भी नूर भर दे और मेरे दिमाग़ में भी नूर भर दे और मेरी हड्डियों में भी नूर भर दे। हे मेरे अल्लाह मेरे दिल में नूर का सम्मान पैदा कर और फिर मुझे नूर प्रदान कर। अत: मुझे साक्षात नूर बना दे। पवित्र है वह ज़ात जो सम्मान का लिबास पहन कर सम्मान के साथ स्थापित है। पवित्र है वह हस्ती जिस के साथ किसी का सम्मान वर्णन करना उचित नहीं। पवित्र है वह सम्मान तथा नेअमत वाली हस्ती। पवित्र है वह इज़्ज़ तथा सम्मान वाली हस्ती वह सम्मान तथा इज़्ज़त वाली।

(सुनन अत्ततिरमज़ी अबवाबुद्दअवात हदीस 3419)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की दुआएं हैं।

आप ने अपने एक सहाबी चौधरी रुस्तम अली साहिब को यह दुआ ख़त में लिखी थी। यह अरबी दुआ है।

يَامَنْ هُوَ اَحَبُّ مِنْ كُلِّ مَحْبُوْبٍ اِغْفِرْلِيْ وَتُبْ عَلَيَّ وَادْخِلْنِيْ فِيْ عِبَادِكَ الْمُخْلَصِيْنَ۔

(अलहक्म 10 अगस्त 1901ई पृष्ठ 9 जिल्द 5 नम्बर 29)

हे वह कि जो प्रत्येक प्रेमी से ज्यादा प्यार करने योग्य है, मुझे माफ़ कर दे और मुझ पर दया कर और मुझे अपने ईमानदार बन्दों में प्रवेश कर। हम तेरे गुनाहगार बन्दे हैं, और नफ्स विजयी हैं, तू हमे क्षमा कर, और परलोक के उत्पीड़न से हमें बचा।

(उद्धरित अख़बार बद्र 26 जुलाई 1906 ई पृश्ठ 3 जिल्द 2 संख्या 30)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल को आप ने एक ख़त लिखा और इस में यह दुआ लिखी। इस ओर ध्यान दिलाया।

हे मेरे मुहसिन और मेरे ख़ुदा मैं तेरा एक कमज़ोर बन्दा गुनाहगार और अज्ञानता में पड़ा हूं। तूने मुझ पर ज़ुल्म पर ज़ुल्म देखा और इनाम पर इनाम किया और गुनाह गुनाह पर गुनाह देखा और उपकार कर उपकार देखा। तूने हमेशा मेरी पर्दा पोशी की और अपनी बहुत सी नेअमतों से मुझे लाभांवित किया। अत: अब भी मुझ नालायक और गुनाह गार पर रहम कर और मेरी बेबाकी को माफ कर और मुझ के मेरे इस ग़म से नजात दे कि तेरे सिवा कोई दुख दूर करने वाला नहीं। आमीन

(मक्तूबाते अहमद भाग 2 मक्तूब बनाम हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब ख़लीफतुल मसीह अव्वल मक्तूब नम्बर 2)

आप ने अल्लाह तआला में फना होने की यह दुआ सिखाई।

हे रब्बुल आलमीन मैं तेरे उपकारों का शुक्रिया अदा नहीं कर सकता। तू बहुत ही रहीम तथा करीम है। तेरे बहुत अधिक मुझ पर उपकार हैं। मेरे गुनाह क्षमा कर ताकि मैं हलाक न हो जाऊं। मेरे दिल में इस प्रकार की शुद्ध मुहब्बत डाल दे ताकि मुझे ज़िन्दगी प्राप्त हो जाए। और मेरे गुनाह छुपा और मुझ पर इस प्रकार के कर्म कर जिन से तू राज़ी हो जाए। मैं तेरे करीम नाम के साथ इस बात से भी पनाह मांगता हूं कि तेरा क्रोध मुझ पर नाज़िल हो। रहम फरमा । रहम फरमा। रहम फरमा। और दुनिया तथा परलोक की बलाओं से मुझे बचा क्योंकि प्रत्येक फज़ल तथा करम तेरे ही हाथ में है। आमीन

(मक्तूबाते अहमद भाग 2 पृष्ठ 59 मक्तूब बनाम हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब मक्तूब नम्बर 3)

अब मैं आम तौर पर हमें इस्लामी दुनिया को भी दुआ में याद रखना चाहिए अल्लाह तआला उनमें एकता उत्पन्न करे और जो उन के जो दिल फटे हुए हैं वे दिल जुड़ जाएं और आपस की दुश्मनियाँ उनकी खत्म हों और दुश्मन उनकी प्रतिद्वंद्विता से जो लाभ उठा रहे हैं अल्लाह तआला उस से उन दुश्मनों के हाथों को रोका, और वे इस्लाम को हानि पहुंचाने से रुक जाएं।

अल्लाह तआला सभी अहमदियों में पुरुषों में महिलाओं में संतोष उत्पन्न करे। उन्हें हर बुराई से बचाए। उन्हें दृढ़ता प्रदान करे और हमेशा वह जमाअत की प्रणाली और ख़िलाफत की प्रणाली से चिमटे रहें और जमाअत की प्रणाली को भी लोगों के हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। उहेदेदारों को उनकी ज़िम्मेदारियों को समझने की तौफीक प्रदान करे। वाक्फीन ज़िन्दगी को वक्फ की भावना के साथ ख़ुदा तआला की सेवा की तौफीक़ प्रदान करे।

अल्लाह तआला हमें दज्जाल के फित्नों और उस की बुराई और उसके बुरे कर्मों से बचाए। अल्लाह तआला उन ताकतों को रोके जो मुसलमानों को कमज़ोर करने वाली हैं को उनकी बुराई से बचाए, बल्कि इसके परिणामस्वरूप न केवल इस्लामी दुनिया बल्कि सारी दुनिया में जो खतरनाक विनाश के आ सकता है। इस तबाही से अल्लाह तआला बचाए। अल्लाह तआला शुहदाए अहमदियत के दर्जे ऊंचे करे। और उनके अभिभावकों को जो पीछे रहने वाले हैं ख़ुद सुरक्षा के सामान पैदा करे। अल्लाह तआला की राह में कैदियों के शीघ्र समान पैदा करे। अल्लाह तआला उन सभी लोगों को जो किसी भी रूप से किसी भी कठिनाई में हैं कठिनाइयों से मुक्ति प्रदान करे। बीमारों को ठीक करे। जो लोग राजनीतिक या धार्मिक रूप से, मुशकिलों में गिरफतार हैं विशेष रूप विभिन्न देशों में जमाअत के लोगों की अल्लाह तआला उन की मुश्किलों को दूर करे और दुश्मन के हाथों को रोके।

दरवेशान कादियान, अब दरवेशान तो बहुत थोड़े रह गए हैं कादियान में रहने वाले कुछ लोग भी परेशानी में हैं उसी तरह पाकिस्तान में रहने वाले और खासकर रबवा के लोग उनकी स्थिति आजकल सरकार द्वारा भी तंग किए जा रहे हैं तंग करने की कोशिश की जा रही है। अल्लाह तआला उन को भी ज़ालिमों से नजात दे और अल्लाह तआला हालात बेहतर करे।

इसी प्रकार, पाकिस्तान के अतिरिक्त भारत के कुछ हिस्सों में, जहां अधिकांश मुसलमान हैं अहमदियों पर अत्याचार किए जा रहे हैं। अल्लाह तआला इन ज़ालिमों के हाथ रोके।

इसी प्रकार इण्डोनेशिया में भी जहां जहां उन को ज़ुल्म के अवसर मिलते हैं वे अहमदियों पर ज़ुल्म करते हैं। पिछले दिनों में भी उन्होंने एक स्थान पर जहां जमाअत थोड़ी थी वहां उन को घरों से निकाल दिया और वे बेघर हुए हैं। अल्लाह तआला उन को भी अपनी हिफाज़त में रखे और दुश्मनों की बुराइयों से बचाए। मैंने पहले भी वर्णन किया था कि अल्लाह तआला मुसलमान देशों को अक्ल दे। यमन में दोबारा फिर बहुत अधिक हमले शुरू हो रहे हैं। ईराक में, सीरिया में फिर्कों के अन्तर के कारण कबीलों के मतभेद के कारण मुसलमान मुसलमान की गर्दनें काट रहा है। अल्लाह उन को अक्ल दे और जिस नबी को यह स्वीकार करने वाले हैं उन की हकीकी शिक्षा पर अनुकरण करने की तौफीक प्रदान करे। और इस ज़माने में अल्लाह तआला ने जिस मसीह और महदी को भेजा है उस को मानने की तौफीक प्रदान करे। ताकि इन ग़लत रास्तों पर चलने से बच सकें। और उन की दुनिया तथा परलोक सुरक्षित रहे।

इसी तरह अल्लाह तआला इन सारे लोगों के मालों तथा जानों में बरकत प्रदान करे जो विभिन्न तहरीकों और जमाअत के चन्दों में माली कुरबानी रहे हैं। इसी प्रकार तब्लीग़ के काम के लिए आज कल एम टी ए बहुत बड़ी भूमिका अदा कर रहा है। अल्लाह तआला एम टी ए की काम करने वालों को और हमारे काम करने वालों में से जो स्वयंसेवक हैं, उन को भी बदला दे। उन को पहले से बढ़ कर काम करने की तौफीक प्रदान करे। एम.टी.ए अफ्रीका भी आजकल बड़ा प्रचार का काम कर रहा है। नया शुरू किया गया है और इस में सब स्थानीय लोग काम कर रहे हैं। अल्लाह तआला उन्हें ज्ञान और इर्फान में बरकत प्रदान करे और वे बेहतर प्रोग्राम बनाकर इस्लाम की वास्तविक सन्देश अपनी क़ौम को भी और दुनिया में भी पुहंचाने वाले हों ।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की एयरपोर्ट पर आगमन से पहले माल बुकिंग, बोर्डिंग कार्ड प्राप्त और आव्रजन कार्रवाई एक विशेष प्रबंधन के तहत पूरी हो चुकी थी। एक बजकर दस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की एयरपोर्ट पर तशरीफ़ हुई। प्रोटोकॉल अधिकारी ने हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ सपीशल लाईनज पधारे। आदरणीय रफीक़ अहमद हयात साहिब अमीर जमाअत यू.के, आदरणीय अख़लाक अहमद साहिब (वकालत तब्शीर लंदन) आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा वक़ास अहमद साहिब (सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया यू.के) और आदरणीय सैयद मुहम्मद अहमद नासिर साहिब (उप अधिकारी सुरक्षा विशेष) एयरपोर्ट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ को अलविदा कहने के लिए साथ आए थे। इन सभी दोस्तों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया और हुज़ूर अनवर को अलविदा कहा।

दो बजकर दस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ जहाज़ पर सवार होने की लिए लाऊनज से रवाना हुए। हुज़ूर अनवर कार एक विशेष प्रबंधन के तहत जहाज़ के करीब लाई गई और प्रोटोकॉल आफसर हुज़ूर अनवर को जहाज़ में सवार करवा कर वापस गया।

ब्रिटिश एयरवेज की फ्लाइट BA 818 दो बजकर 35 मिनट पर हीथ्रो (HEATHROW) एयरपोर्ट लंदन से डेनमार्क के कोपेनहेगन (COPENHAGEN) एयरपोर्ट के लिए रवाना हुई।

एक घंटा पचास मिनट की उड़ान के बाद डेनमार्क स्थानीय समयानुसार 5 बजकर 25 मिनट पर विमान कोपेनहेगन एयरपोर्ट पर उतरा और हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के मुबारक कदम तीसरी बार डेनमार्क की धरती पर पड़े।

डेनमार्क का समय ब्रिटेन के समय से एक घंटा आगे है। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ जहाज़ से बाहर आए तो प्रोटोकॉल अधिकारी के साथ आदरणीय मुहम्मद ज़करिया ख़ान साहिब अमीर मुबल्लिग़ इन्चार्ज डेनमार्क और आदरणीय मुहम्मद अकरम महमूद साहिब मुबल्लिग़ डेनमार्क व सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया डेनमार्क ने हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की गाड़ी जहाज़ के दरवाजा के पास ही पार्क की गई थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ गाड़ी में सवार हुए और बिना किसी भी आव्रजन के काम के यहाँ से जमाअत के केंद्र " मस्जिद नुसरत जहां " के लिए प्रस्थान किया।

छह बजकर पंद्रह मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ मस्जिद नुसरत जहां में प्रवेश किया। जमाअत के दोस्तों पुरुषों और महिलाओं ने अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया। बच्चियों के समूह स्वागत गीत प्रस्तुत कर रहे थे। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ कार से बाहर आए तो आदरणीय नेअमतुल्लाह बिशारत साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला डेनमार्क और आदरणीय फलाहुद्दीन साहिब मुबल्लिग़ डेनमार्क ने हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। सुश्री अमतुल मन्नान साहिबा सदर लजना इमाउल्लाह डेनमार्क ने हज़रत बेगम साहिबा मद्दाज़िल्लाह का स्वागत किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बढ़ा कर सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और अपने आवासीय भाग में पधारे।

आज का दिन जमाअत डेनमार्क लिए बहुत धन्य और ख़ुशी और प्रसन्नता का दिन है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के मुबारक कदम इस धरती पर पड़े हैं। अल्लाह यह सआदत इस जमाअत के लिए बहुत बरकत का कारण बने।

इस के बाद छह बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ मस्जिद नुसरत जहां में नमाज़े ज़ोहर व अस्त्र जमा कर के पढ़ाई । नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने नव निर्मित होने वाले मिशन हाउस और अन्य इमारतों का निरीक्षण किया। इस नए कंपलकस में " मस्जिद नुसरत जहां " से जुड़ी जगह पर पुस्तकालय, कार्यालय, आठ बाथरूम के कमरे, दो लॉबी और एक जमाअत का किचन निर्माण हुआ है। नीचे (BASEMENT) में लजना के लिए नमाज़ केन्द्र निर्माण हुआ है जिसका क्षेत्रफल 210 वर्ग मीटर है। इस के अलावा लजना कार्यालय और साऊंड सिस्टम कक्ष और एक पॉलिटेक्नि रूम है। इसके अलावा मस्जिद नुसरत जहां के मुकाबले सड़क के दूसरी तरफ एक बहुत पुरानी और जीर्ण Villa 1999 ई में खरीदा गया था। इस इमारत को गिराकर यहां 363 वर्ग मीटर शामिल (BASEMENT) निर्माण किया गया है, जिसमें आठ कार्यालय हैं और 180 वर्ग मीटर का एक व्यापक हॉल हैं और एक दुकान भी शामिल है।

इस तहखाने के ऊपर 120 वर्ग मीटर मुरब्बी हाउस बनाया गया है और इसके अलावा दो कमरे और रसोई आदि की सुविधा युक्त एक गेस्ट हाउस भी निर्माण किया गया है। इस तरह VILLA का स्थान कुल 727 वर्ग मीटर इमारतों का निर्माण हुआ है। सभी निर्माण को मिला कर कुल मिलाकर 1209 वर्ग मीटर नया निर्माण हुआ है। यह पूरा परिसर बहुत ही सुन्दर है। निरीक्षण के दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ मस्जिद नुसरत जहां से सटे कार्यालयों और पुस्तकालय विज़िट के बाद नीचे लजना के नमाज़ हॉल में पधारे। इस अवसर पर अमीर साहिब डेनमार्क ने बताया कि हॉल का एक भाग मस्जिद से आगे है। इस लिए हॉल में दीवार के साथ एक निशान लगा दिया गया है, ताकि इससे पिछली पंक्तियों में नमाज़ पढ़ी जाए। उस पर हुज़ूर अनवर ने निर्देश देते हुए कहा कि केवल निशान पर्याप्त नहीं बल्कि नियमित सामने एक रोक होनी चाहिए कि इससे पीछे ही रहना है। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ बाहरी तरफ से भी इमारत का निरीक्षण किया और अमीर साहिब डेनमार्क विभिन्न मामलों के विषय में पूछा। उसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ इन इमारतों के उस भाग में पधारे जहां तहखाने में आठ कार्यालय और एक बड़ा हॉल बनाया गया है। कार्यालयों के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर हॉल में पधारे जहां महिलाएं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थीं । महिलाओं ने अपने प्यारे आक़ा का दर्शन किया और बच्चियों के समूह ने पाठ्यक्रम के रूप में दुआ की नज़में और स्वागत गीत पेश किए। हुज़ूर अनवर लगभग पच्चीस मिनट यहाँ रौनक अफरोज़ रहे। इस दौरान बच्चियां नज़में पढ़ती रहें और महिलाऐं दर्शन से लाभान्वित होती रहीं। हुज़ूर अनवर ने करूणा करते हुए सभी बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किए। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने गेस्ट हाउस का निरीक्षण किया और फिर अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

कार्यक्रम के अनुसार नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ मस्जिद नुसरत जहां पधारे नमाज़ मग़रिब व इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ अदा करने बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय भाग में पधारे।

डेनमार्क में जमाअत के मिशन की शुरुआत सितंबर 1958 ई में हुई जब आदरणीय सय्यद कमाल यूसुफ साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला स्वीडन पहली बार डेनमार्क पहुंचे। इस समय जमाअत की ग़रीबी की यह अवस्था थी कि उन्होंने लोगों से लिफ्ट लेकर अपनी यात्रा पूरी की। कुछ देर यूथ होस्टल में रहे। इस के बाद परिवार के गेस्ट के रूप में विभिन्न मकानों में रहने।

डेनमार्क के पहले स्थानीय अहमदी अब्दुस्सलाम साहिब मीडसन हैं। उन्होंने 1958 ई में बैअत की। उन्होंने कुरआन का डेनिश भाषा में अनुवाद किया और मानद मुबल्लिग़ के रूप में सेवा की तौफ़ीक़ पाई।

डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगन में सेकंड स्कैंडिनेवियाई की सबसे पहली मस्जिद " मस्जिद नुसरत जहां 'का शिलान्यास 6 मई 1966 ई को रखा गया। आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुबारक अहमद साहिब ने आदरणीय चौधरी सिर

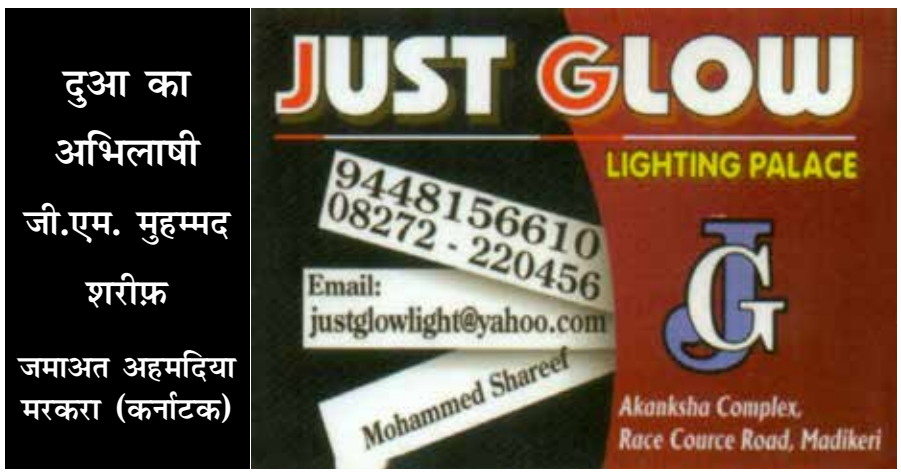

ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब, चौधरी अब्दुल लतीफ साहिब मुबल्लिग़ जर्मनी, बशीर अहमद रफीक़ साहिब मुबल्लिग़ इंगलिस्तान के संगत में मस्जिद मुबारक कादियान की ईंट जो हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह ने पहले से ही भिजवाई हुई थी, के रूप में आधारशिला रखी।

महिलाओं ने इस मस्जिद के निर्माण के लिए वित्तीय क़ुर्बानियाँ पेश कीं और यह मस्जिद महिलाओं के चन्दों से निर्माण की गई । मस्जिद का नाम हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा के नाम पर '' मस्जिद नुसरत जहां '' रखा गया।

यह मस्जिद वास्तुकला की दृष्टि से अद्वितीय पकड़ है और इस उत्कृष्ट नमूने ने पूरे डेनमार्क में ख्याति अर्जित की।

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सासिल रहमहुल्लाह ने अपने पहले दौरे डेनमार्क में 21जूलाई 1967 ई दिनांक शुक्रवार '' मस्जिद नुसरत जहां 'का उद्घाटन फरमाया।

आदरणीय मीर मसऊद अहमद साहिब मरहूम मुबल्लिग़ इन्चार्ज डेनमार्क ने बहुत कठिन परिस्थितियों के बावजूद जगह ढूँढने और ज़मीन ख़रीदने में मूल्यवान सेवा की। इस मस्जिद के निर्माण पर कुल मिलाकर पांच लाख रुपए की लागत आई। यह सब राशि अहमदी महिलाओं ने सदर लजना मरकिज़या हज़रत सय्यदा उम्मे मतीन मर्यम सिद्दीक़ा साहिबा की निगरानी में जमा की। अक्सर ने अपने सारे के सारे आभूषण चंदा में दे दिए। शुरुआत में रकम का अनुमान दो लाख था। फिर निर्माण के साथ यह खर्च बढ़ते रहे और पांच लाख रुपए तक पहुंच गए। लजना ने यह सारी राशि पूरी कर दी। '' मस्जिद नुसरत जहां '' उन मस्जिदों में से एक है जो विशेष रूप से औरतों ने अपने चन्दों से निर्मित की हैं।

इस से पहले '' मस्जिद नुसरत जहां '' के साथ एक छोटा सा मिशन हाउस था और एक साझा रसोई घर था और उसके साथ एक छोटा सा कार्यालय था। तहखाने में एक दुकान तथा 32 वर्ग मीटर हॉल था और दो छोटे बाथरूम थे। दो छोटे कमरे थे एक ख़ुद्दामुल अहमिदया के कार्यालय के लिए दूसरी कमरा MTA लिए इस्तेमाल होता था। इस तरह ऊपर नीचे मिलाकर पूरा निर्माण क्षेत्रफल 201 वर्ग मीटर बनता था।

अब अल्लाह की कृपा से मस्जिद के साथ इस निर्माण कार्य को समाप्त करके एक बड़े हिस्से पर नए निर्माण हुआ है और इसी तरह मस्जिद के मुकाबले सड़क के दूसरी तरफ भी बड़ा व्यापक निर्माण हुआ है। इन निर्माण में दो हाल्स, बड़ी संख्या में कार्यालयों, पुस्तकालय, मिशन हाउस, मुरब्बी हाउस और गेस्ट हाउस, दुकान और कई नहाने के कमरे आदि हैं जिस का थोड़ा विवरण पहले गुजर चुकी है।

5 मई 2016 (दिन गुरुवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ सुबह सवा चार बजे मस्जिद नुसरत जहां पधारे और नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय भाग में पधारे।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ सरकारी मामलों के करने में व्यस्त रहे। दो बजे हुज़ूर अनवर ने मस्जिद नुसरत जहां पधारे नमाज़े ज़ोहर व अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

इस दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने अमीर साहिब डेनमार्क को हिदायत फ़रमाई कि लजना हॉल की तरफ जाने वाले जो दोनों रास्ते हैं, एक रास्ते पर सीढ़ियां हैं और दूसरे रास्ते पर RAMP है इन दोनों मार्गों पर दोनों तरफ रेलिंग लगा दें ताकि नीचे उतरने में सुविधा रहे।

इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार सात बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे जहाँ मस्जिद क्षेत्र HVIDOVRE नगरपालिका के मेयर WON HELLE ADELBORG साहिबा ने अपने चार पार्षदों ANNETTE SJOBECK साहिबा, MARIA DURHUUS साहिबा, KENNETH F CHRISTENSEN साहिबा और काशिफ अहमद साहिब के साथ ज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की सआदत पाई। काशिफ अहमद अहमदी युवा हैं।

मेयर साहिबा ने परिचय करवाते हुए बताया कि वह इस मस्जिद के क्षेत्र के मेयर हैं और बाकी मेरे साथ इस क्षेत्र के पार्षद हैं। डेनमार्क में घरेलू स्तर पर आज छुट्टी का दिन था। हुज़ूर अनवर ने मेयर साहिबा से पूछा कि आज यहां छुट्टी क्यों है। इस पर बताया गया कि आज ईसाइयों की छुट्टी है कि ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर गए थे। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि कोई दूसरा देश तो इस तिथि को छुट्टी नहीं मनाता और पड़ोसी देश स्वीडन में भी आज कोई ऐसी छुट्टी नहीं है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : आजकल रिफ्यूजी संकट की वजह से सीमा मुक्त नहीं हैं और पर्याप्त जाँच हो रही है। इस पर मेयर ने अर्ज़ किया कि हमें भी इस बात का अफसोस है कि सख्त जाँच हो रही है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : हम सबको एकजुट होना चाहिए और दुनिया की शांति पर ध्यान देना चाहिए। शांति की स्थापना से ही सभी कठिनाइयों दूर होंगी। मेयर ने कहा कि यहां अहमदी समुदाय बहुत शांतिपूर्ण है। बहुत मुहब्बत करने वाले लोग हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: "ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने उस मसीह अलैहिस्सलाम को स्वीकार किया है जो इस युग में आया है जिसने यह घोषणा की है कि वह ईसा मसीह के पद चिन्हों पर आया है।" और जिस तरह पहले मसीह ने अनुकरण किया है और शिक्षा दी है। मैं भी उसी तरह करूंगा। अत: अहमदियों ने चूंकि इस युग में आने वाले मसीह अलैहिस्सलाम को माना है इसलिए उनके लिए यह बात अनिवार्य है कि वह शांतिपूर्ण हों और प्रत्येक के साथ प्यार और मुहब्बत से पेश आने वाले हों और दूसरों का ध्यान रखने वाले हों।

मेयर ने कहा कि हुज़ूर अनवर ने यह नया निर्माण देखा? हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मैं कल आया हूं। कुछ समय बाद मैंने यह सब नया निर्माण देखा है। आप सब का धन्यवाद के आप ने इस की अनुमति दी। आज हम जिस जगह पर बैठे हैं, यह भी एक नई जगह और बहुत अच्छी जगह है, अन्यथा पहले तो कोई जगह नहीं थी।

मेयर ने कहा कि यह बहुत सुन्दर मस्जिद है और मेरे विचार में स्कैंडिनेविया की पहली मस्जिद है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा: "अपनी वस्तु कला की दृष्टि से यह इमारत आपके क्षेत्र में बहुत सुन्दर है, यह बिल्डिंग सूचीबद्ध होनी चाहिए। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अब नीचे एक बड़ा हॉल भी बनाया गया है। आप यहां अपना फंकशन भी कर सकती हैं।

इस सवाल के जवाब में कि हुज़ूर अनवर आजकल कहाँ रहते हैं और दुनिया के देशों की यात्रा करते हैं? हुज़ूर अनवर ने फरमाया: "मैं आजकल लंदन में रहता हूं।" मैं दुनिया के विभिन्न देशों के दौरे पर जाता हूं जहां आवश्यकता पड़ती है। दुनिया भर में हमारे मिशन हैं। कई बहुत नए हैं और कुछ बहुत पुराने हैं। जब नई मस्जिदें और केंद्र बनाए जाते हैं या एक विशेष कार्यक्रम, घटनाएं होती हैं मैं जाता हूं। पिछले साल नवंबर में, मैं जापान गया था। हमारी पहली मस्जिद का उद्घाटन किया हुआ था। तो मैं इस तरह के अवसर पर मैं यात्रा करता हूं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर मेयर बताया कि इस क्षेत्र में 41 पार्षद हैं और क्षेत्र की आबादी 55 हज़ार है और उनमें से 35 हज़ार वोट देने योग्य हैं जिनकी उम्र 18 साल या उससे अधिक है जो मतदाता सूची में शामिल हैं इस पर ज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, "इसका मतलब है कि आपके क्षेत्र की आबादी का तीसरा हिस्सा 18 साल से कम है। इस का अर्थ है, आपके युवा कम हो रहे हैं। अपनी युवा पीढ़ी की संख्या बढ़ाऐं। आपको अपने परिवारों को बढ़ाना चाहिए। हुज़ूर अनवर ने फरमाया : आपका क्षेत्र बहुत अच्छा, ताज़ा हवा है और सुखद माहौल है। यह एक अच्छा वातावरण है।

एक महिला पार्षद मारिया जी ने सवाल किया कि आप को इस्लाम की तब्लीग़ और शांति की स्थापना के लिए किया चुनौती हैं और अपनी पर्सी क्योशन भी हो रही है? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: इस्लामी देशों खासकर पाकिस्तान में सरकार द्वारा हमारा विरोध किया जा रहा है। नियमित कानून बनाया जाता है। हम ख़ुद को एक मुसलमान नहीं कह सकते हैं। मुस्लिम की तरह कार्य नहीं कर सकते हैं और ख़ुद को एक मुसलमान के रूप में नहीं दिखा सकते हैं। यह एक नियमित कानून है।

अन्य देशों में इंडोनेशिया, मलेशिया आदि। सरकारी स्तर पर कोई कानून तो नहीं है लेकिन हम अपने अधिकारों से वंचित किया जाता हैं और हम तब्लीग़ नहीं कर सकते हैं और हमारा संदेश नहीं पहुंचा सकते हैं। लेकिन इसके बावजूद, हमारा समुदाय के लोग इन देशों में बढ़ रहे हैं और लोग जमाअत में शामिल हो रहे हैं।

अफ्रीकी देशों में, साऊथ अमेरिकी देशों में हमारी संख्या तेज़ी से बढ़ रही है।

चुनौती हर जगह है और यह खेल का हिस्सा है। जब फुटबॉल खेलें तो सफलता को प्राप्त करने के लिए प्रयास किया जाना चाहिए और दूसरी तरफ से मुश्किलें सामने आती हैं। जितना बड़ा लक्ष्य, लक्ष्य जितना बड़ा है उतनी ही बड़ी कठिनायां हैं जिन का समाना करना पड़ात है। लेकिन इन सभी बातों के बावजूद हम विकास कर रहे हैं। हर साल पांच लाख से ज्यादा लोग जमाअत में शामिल हो रहे हैं। और ये पूरी दुनिया से शामिल होते हैं। और ये शामिल होने वाले शांतिपूर्ण लोग हैं। यदि आपका संदेश अच्छा है, तो यह स्वीकार किया जाता है कि यह अच्छा है। यदि यह अच्छा न होता तो इसे खारिज कर दिया जाता।

लेकिन ये जो चरमपंथी और उनका जो कट्टरता का सन्देश है इस ने भी कुछ हद तक लोगों का आकर्षित किया है। लेकिन यह लंबे समय तक इस का आकर्षण नहीं हो सकता है। अब युवा जो यूरोप से जा कर इस में शामिल हुए हैं जब कुछ समय बाद, उन्हें असली तथ्य पता चलता है तो उन्होंने इस स्थिति से बाहर निकलने का इरादा किया है। लेकिन उन्हें वापस आना मुश्किल लग रहा है। इसी सोच में या तो मारे जाते हैं या जिहादी संगठनों द्वारा अत्याचार किए जाते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: हमारा यह संदेश इस प्रकार का है कि लाखों लोग प्रत्येक वर्ष असली इस्लाम में प्रवेश कर रहे हैं। अरब देशों में हमारा सरकारी स्तर पर और उलमा की तरफ से भी विरोध है। लेकिन अरब देशों में भी लोग अहमदियत में प्रवेश कर रहे हैं।

एक काउंसिलर ने कहा कि कुछ न कुछ तो आप लोगों को खतरा होगा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "मैं भी पाकिस्तान में कैद रहा हूं। मुझ पर आरोप यह था कि बस स्टैंड के पास एक बोर्ड पर कुरआन की आयत मिटाने का प्रयास किया है, जो पूरी तरह से ग़लत था। तो इस प्रकार विरोधी कोई सबूत के बिना आरोप लगाते हैं, और फिर इस प्रकार अत्याचार करते हैं।

इस पर काउंसिलर ने कहा कि यूरोप में रहते हुए, मेरे लिए इस तरह के अत्याचार के बारे में सोचना मुश्किल है। यहां हम स्वतंत्र हैं। धार्मिक स्वतंत्रता है। बात करने की, प्रचार करने की स्वतंत्रता है। जिस प्रकार चाहें बात कर सकते हैं और अपने कार्यों को व्यक्त कर सकते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यद्यपि यहाँ बात करने की स्वतंत्रता है लेकिन आप ANTI-SEMITIC कार्रवाई नहीं कर सकते यहूदियों के ख़िलाफ बात नहीं कर सकते। जर्मनी में यह कानून है कि तुम किसी देश के मुखिया का उपहास नहीं कर सकते हैं।

अगर तुर्की के राष्ट्रपति का कार्टून बनाया गया तो जर्मन चांसलर ने कहा कि यह कानून के ख़िलाफ है। तो, जिस ने इस प्रकार किया उस व्यक्ति के ख़िलाफ मुकदमा शुरू किया गया है ।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: यह सच है कि स्वतंत्रता की आज़ादी, राय की स्वतंत्रता, प्रचार, संदेश देने की आज़ादी है। लेकिन अगर यह स्वतंत्रता दूसरों की भावनाओं को आघात कर रही है, तो उस पर कुछ सीमा लगानी पड़ेगी। कोई रास्ता निकालना पड़ेगा तो शांति और सहिष्णुता और भाईचारे की स्थापना की जा सकती है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: " जो बात मैंने अभिव्यक्ति की आज़ादी के बारे में कही है हर बुद्धिमान व्यक्ति मेरे द्वारा स्वतंत्रता के आधार पर की गई राय से मुझसे सहमत होगा।" कैथोलिक पोप ने कहा कि अगर कोई मेरे अच्छे मित्र, माता के ख़िलाफ गाली दे तो है तो फिर उसे तैय्यार रहना चाहिए कि उस मुक्का पड़ेगा। ईसाईयों को पोप की बात सुननी चाहिए। पोप लोगों की भावनाओं की रक्षा करने की कोशिश कर रहा है। मैं यही समझता हूं कि वह इस पहलू से वास्तविक ईसाई धर्म की शिक्षाओं का पालन कर रहा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "पश्चिमी दुनिया में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की चरम है कि दूसरों का उपहास करते हैं । कार्टून बना कर उपहास करते हैं और मुस्लिम दुनिया में स्वतंत्रता के नाम पर यह चरम है कि हम अपने आप को मुसलमान भी नहीं कह सकते। धर्म के नाम पर एक दूसरे का कत्ल हो रहा है यह समय है कि हम शान्ति की स्थापना करें।

इस्लाम कहता है कि यह धर्म का मामला में बलात नहीं है बल्कि धर्म का मामला ख़ुदा तआला के हाथ में है। धर्म के आधार पर उसी ने निर्णय लेना है। मनुष्य को चाहिए कि एक दूसरे का सम्मान करे, मानव मूल्यों का ख्याल रखना महत्त्वपूर्ण है। धर्म का मामला ख़ुदा तआला के हाथ पर रहने दें। यदि धर्म एक दूसरे को मारेंगे, कत्ल करेंगे तो फिर कौन किस धर्म पर चलेगा, फिर धर्म का क्या लाभ? एक दूसरे को मारते हुए सब मर जाऐंगे।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: "यदि हम इस सिद्धांत पर स्थापित हों कि हम सभी इंसान हैं और हम ने मानवीय मूल्यों को स्थापित करना है और एक-दूसरे का सम्मान करना है, तो दुनिया में शांति स्थापित की जा सकती है।"

इस सवाल के जवाब में कि हुज़ूर कब से ख़लीफा है, हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि मैं पिछले 13 सालों से इस स्थिति पर रहा हूं।

एक प्रश्न के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मैं यहां 2005 में आया था। यह उस समय इमारत नहीं थी। अब नए निर्माण हुए हैं। यहां हमारा स्थानीय समुदाय है। बहुत से लोग, परिवार के सदस्य, वे मुझसे मिलेंगे और मैं उनसे मिलूंगा। जैसे-जैसे लोग अपने करीबी रिश्तेदारों से मिलते हैं और प्रियजनों से मिलते हैं और एक-दूसरे से मिलकर ख़ुश होते हैं। इस तरह हमारी मुलाकातें होंगी।

मेयर और परिषद के साथ यह मुलाकात लगभग 25 मिनट पर समाप्त हुई। अंत में, सभी मेहमानों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर लेने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे जहां पारिवारिक मुलाकातें शुरू हुईं। आज, 25 परिवारों के 84 सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से मिलने का मौका मिला। प्रत्येक ने अपने प्यारे आक़ा के साथ चित्र बनवाने की सआदत पाई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किए।

मुलाकात करने वाले यह परिवार डेनमार्क के निम्नलिखित क्षेत्रों से आए थे। Hvidovre, Broendby, Albertslund, Amager, Aarhus, Copenhagen आज मुलाकात करने वालों में कुछ परिवारों, ऐसे थे जो अपने जीवन में पहली बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से मिल रहे थे उनके भावनाओं और ख़ुशी की अभिव्यक्ति उन के चेहरों से प्रकट हो रही थी। सभी अपनी इस ख़ुशनसीब और सआदत पर बेहद खुश थे कि आज उनके जीवन में पहली बार ऐसा मुबारक दिन आया कि उन्होंने ख़लीफतुल मसीह के निकटता में कुछ क्षणों बिताए। अल्लाह तआला इन आशीर्वादों और बरकतों को स्थायी बना दे और हमारी नस्लें भी इन बरकतों से लाभ पाएं। अमीन

मीटिंग्स का यह कार्यक्रम 8 बज कर 25 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने घर पधारे।

सवा नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद नुसरत जहां में पधार कर नमाज़ मग़िरब इशा पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय क्षेत्र में गए।

6 मई 2016 (दिनांक जुमा मुबारक)

सुबह सवा चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ मस्जिद नुसरत जहां पधार कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ कार्यालय के मामलों में व्यस्त रहे।

आज शुक्रवार का मुबारक का दिन था और डेनमार्क की भूमि से हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ का यह दूसरा ख़ुत्बा जुम्अ: था जो MTA द्वारा दुनिया भर में live प्रसारित हो रहा था। इससे पहले ग्यारह साल पहले 9 सितम्बर 2005 ई को हुज़ूर अनवर ने मस्जिद नुसरत जहां कोपेनहेगन में ख़ुत्बा जुम्अ: इरशाद फ़रमाया था जो MTA पर सीधे

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

live प्रसारित हुआ था।

अपने प्यारे आक़ा के अनुसरण में शुक्रवार की नमाज़ अदा करने के लिए डेनमार्क की जमाअतों के अलावा नॉर्वे, बांग्लादेश, स्वीडन, स्पेन, जर्मनी, कनाडा, ब्रिटेन और बेल्जियम की जमाअतों से जमाअत के दोस्त बड़ी संख्या में डेनमार्क पहुंचे थे।

मस्जिद के अलावा, दोनों प्रमुख हॉल और मार्कीज़ नमाज़ के लिए भरे हुए थे और कुल उपस्थिति छह सौ से अधिक थी। दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद नुसरत जहां पधार कर ख़ुत्बा जुम्अ: फरमाया। (ख़ुत्बा जुम्अ: का पूरा पाठ अखबार बदर में पहले प्रकाशित हो चुका है।)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के इस ख़ुत्बा जुम्अ: को डेनिश भाषा में यहाँ स्थानीय सीधे अनुवाद किया गया। यह ख़ुत्बा जुम्अ: तीन बजे से पांच बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने नमाज़ जुम्अ: के साथ नमाज़ असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

कार्यक्रम के अनुसार सुबह सात बजे, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने अपने कार्यालय का दौरा किया और परिवार के सदस्यों से मिलना शुरू कर दिया। इस शाम के इस सत्र में, 28 फैमलीज़ और परिवारों के 91 लोगों ने अपने प्यारे आका से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने कृपा करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी आयु की बच्चियों को चाकलेट प्रदान किए।

प्रत्येक परिवार ने अपने प्यारे आक़ा के साथ चित्र खींचने का सौभाग्य प्राप्त किया। मुलाकात करने वाले यह परिवार निम्नलिखित क्षेत्रों से आए थे। Broendby, Hvidovre, Copenhagen, Amager, Albertslund, यूलैंड (Jutland) और नार्थ शी द्वीप (North Sealand) इसके अलावा नॉर्वे से आने वाले दोस्तों ने भी मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। मिले पाया। मीटिंग आठ बज कर 45 मिनट तक जारी रही। इस के बाद में, हुज़ूर अनवर अपने निवास पर पधारे।

सवा नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद नुसरत जहां पधार कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने आवासीय क्षेत्र में गए।

अल्लाह तआला की कृपा से इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में भी कवरेज हुई। डेनिश नेशनल टी.वी चैनल डी आर ने शाम को अपने 6 मई 2016 ई को समाचारों में जमाअत के बारे में जो ख़बर प्रकाशित की। ख़बर में यह बताया गया था कि 50 साल पहले, डेनमार्क की पहली मस्जिद की नींव 6 मई 1966 ई को रखी गई थी। इस के साथ ही इस समय की वीडियो की झलकियां भी दिखाई गई थीं। जिस में साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुबारक अहमद साहिब को नींव रखते हुए दिखाया गया था।

ख़बर में बताया गया कि आज नुसरत जहां में यह दिन मानाया जा रहा है इस अवधि के दौरान, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला को ख़ुत्बा जुम्अ: अदा करते हुआ दिखाया को। यह टी.वी. चैनल पूरे देश में देखा जाता है। इस राष्ट्रीय टीवी चैनल के इस कार्यक्रम को देखने वाले लोगों की संख्या साढ़े चार लाख थी।

डेनमार्क टी.वी -2 पर मस्जिद नुसरत जहां से लाइव दो मिन्ट का प्रसारण प्रसारित किए गए थे। इस में मस्जिद के बारे में पूछा गया जिसमें उन्हें बताया गया था कि यह मस्जिद यहां पचास वर्षों से स्थापित है और समाज में शांति फैलान का कारण रही है। पड़ोसियों के बारे में बताया जाता है कि प्यार और मुहब्बत के साथ हर किसी के साथ रहे हैं और यह सहिष्णुता के साथ सारा समय गुज़ारा है। इसके अलावा, ऐसा कहा जाता है कि इस संदर्भ में आज हमारे ख़लीफा ने ख़ुत्बा जुम्अ: दिया है। जिसमें हमारे ख़लीफा ने इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित किया है कि सभी अहमदी को दूसरों के लिए नमूना बन कर रहना जाना चाहिए और दूसरों के अधिकारों को अदा करना चाहिए। अंत में पत्रकार ने यह सवाल किया कि क्या आपको लगता है कि यह मस्जिद आज से पचास साल बाद भी कायम रहेगी जिस पर इन्ट्नेवियू देने वाले युवक ने उत्तर दिया कि इंशा अल्लाह तआला। यहाँ सौ साल बाद भी मस्जिद मौजूद होगी।

इस टीवी चैनल को देखने वालों की संख्या 2 मिलियन है। मस्जिद के क्षेत्र के स्थानीय समाचार पत्र Hvidovre Avis का प्रतिनिधि जुम्अ: की नमाज़ा के अवसर पर मस्जिद नुसरत में आया। उन्होंने इस अवसर पर तस्वीरें लीं और ख़ुत्बा जुम्अ: के नोटस भी लिए। इस समाचार पत्र का साप्ताहिक प्रकाशन पचास हज़ार के लगभग है। इसलिए, अगले सप्ताह की संख्या में इंशा अल्लाह जमाअत के के संदर्भ में ख़बर प्रकाशित हो जाएगी।

7 मई 2016 ई (दिनांक शनिवार)

सुबह सवा चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद नुसरत जहां पधार कर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर अपने निवास स्थान पर गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने डाक, रिपोर्टें और ख़त देखे और रिपोर्टों पर अपने हाथ से निर्देश दिए । हुज़ूर अनवर यहाँ प्रवास के दौरान लंदन केंद्र और अन्य देशों से जो मेल, ईमेल, फैक्सज़ प्राप्त हो रही हैं हुज़ूर अनवर दैनिक उन्हें देखते हैं और निर्देश देते हैं।

कार्यक्रम के अनुसार ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय आए और परिवारों तथा व्यक्तिगत दोस्तों मुलाकातों का कार्यक्रम शुरू हुआ।

कुल मिलाकर, 48 परिवारों के 160 लोगों ने अपने प्यारे आका से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। प्रत्येक ने हुज़ूर अनवर के साथ चित्र लेने का मौका मिला। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को करूणा करते हुए चॉकलेट प्रदान किए।

आज,मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त करने वाले परिवार के सदस्य डेनमार्क की निम्नलिखित जमाअत के बारह वर्गों से आए थे।

Hvidovre, Broendby, Albertslund, Amager, Aarhus, Jutland, Fredriksvaerk, Odense, Haslev, Vallensbaek, Taastrup, कूपन हेगन, इसके अलावा जर्मनी से आने वाले कुछ दोस्तों ने भी मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया मिले पाया।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम दो बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद नुसरत जहां में पधार कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर गए।

कार्यक्रम के अनुसार साढ़े छ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ मीटिंग कक्ष में आए जहां राष्ट्रीय मज्लिस लजना इमाउल्लाह डेनमार्क की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग शुरू हुई। हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई । इस के बाद सदर लजना इमाअल्लाह ने आमला का परिचय करवाया। हूज़ूर अनवर ने मजलिसों तथा तजनीद के बारे में पूछा इस पर जनरल सैक्रेटरी ने बताया कि हमारी मजलिसों की संख्या छह है जिनमें में से पांच मजलिसें हमेशा रिपोर्टस देती हैं और डेनमार्क लजना की तजनीद 180 और नासरात की संख्या 35 है। जबकि 24 बच्चियां सात साल से छोटी हैं।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने सैक्रेटरी तरबियत से उन के विभागों के बारे में पूछा। हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फरमाया कि लजना को सब से पहले नमाज़ और कुरआन की तिलावत की तरफ ध्यान दिलाएं। आप एक तरफ माताओं को कह दें कि घरों में नमाज़ पढ़ें और कुरआन की तिलावत करें। नमाज़ें और कुरआन की तिलावत यह सब से बुनियादी चीज़ है फिर यह कि घरों में एम टी ए के प्रोग्राम दिखाएं। एम टी से जोड़ें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मैंने ख़ुत्बा जुम्अ: में भी कहा था कि एम.टी.ए के माध्यम से मेरे ख़ुत्बे हर जगह, हर घर तक पहुंच रहे हैं। मैंने आपको बताया कि जो सुनना चाहे सुन सकता है। तो इसका मतलब यह था कि कम से कम ख़ुत्बा तो सुन लें। और यदि यह बात नहीं है, तो ख़ुत्बा क सारांश निकाल लें। और इसे डेनिश में अनुवाद करके अपनी मेमबरात को सुनाएं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: ख़ुत्बा का अगर डेनिश अनुवाद नहीं होता है, तो अपने मुरब्बी साहिब से लेकर लजना तक पहुंचाऐं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: तरबियत का विभाग, यदि सैक्रेटरी एम टी ए और

सैक्रेटरी इशाअत के साथ मिलकर प्रोग्राम बनाएं। और समीक्षा लें के इस सप्ताह या इस महीनें में एम टी ए पर कौन कौन से प्रोग्राम आ रहे हैं उन में से कौन कौन से लाभ दायक हो सकते हैं तो फिर ये प्रोग्राम अपनी लजना को सुनाएं। जिन को उर्दू समझ नहीं आती उन को अंग्रेज़ी में समझाएं। यहां की भाषा जानने वाली लड़कियों को अपनी टीम में शामिल करें। इस काम के लिए टीमें बनाएं ताकि आप की अगली नस्ल तबाह न हो जाए।

हूज़ूर अनवर ने फरमाया नौजवान बच्चियां हैं नौजवान बच्चे हैं लड़कों को भी लड़कियों को भी औरतें संभाल लें मर्द तो नहीं संभालेंगे। इसीलिए तरबियत का जो विभाग है आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने औरतों के ज़िम्मा किया है । आप ने जो यह फरमाया है कि माताओं के कदमों के नीचे जन्नत है यह तरबियत के कारण से ही है। माता के कदमों के नीचे जो जन्नत है वह तरबियत के कारण से ही है। और केवल लड़की की तरबियत के कारण नहीं बल्कि लड़कों की तरबियत के कारण से भी है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया सदर लजना और सैक्रेटरी तरबियत सिर जोड़ कर बैठें और देखें कि समस्याएं क्या हैं और उन को किस प्रकार हल करना है। अगर आप केवल अपने बच्चों घर वालों और औरतों मर्दों को एम टी ए से जोड़ दें तो तरबियत का बहुत बड़ा हिस्सा आप अपने घरों में घर बैठे ही हल कर सकती हैं।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने सैक्रटरी नासरात से नासरात की संख्या पूछी। जिस पर सैक्रेटरी नासरात ने बताया कि कुल 34 नासारात हैं। हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फरमाया इन के लिए तो वक्फ नौ का निसाब ही काफी है अब तो 21 साल तक की आयु के लिए निसाब बन गया है अगर सारी लजना को पढ़ा दें तो उन के लिए काफी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : बच्चों के लिए "अपनी रुचि के सामान पैदा करें। अपने पड़ोसी देशों के उदाहरण लें। वहां से, महिलाओं और बच्चियों के समूह मुझसे मिलने के लिए लंदन आते हैं। आप भी लंदन आने का प्रोग्राम बनाएं। लजना और नासरात को मेरे पास लेकर आएं। इसके लिए कोशिश करें और माताओं से मीटिंग करें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया बात करते समय हमेशा नर्म व्यवहार करें। कुरआन करीम में अल्लाह तआला ने यही फरमाया है कि नर्मी से बात करो।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी सनअत तथा तरबियत को हिदायत देते हुए फरमाया औरतों को हाथ के काम सिखाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सैक्रटरी ख़िदमते ख़ल्क को हिदायत देते हुए फरमाया बड़ी उम्र की औरतों को ज़बान सिखाएं और उन को बूड़ी औरतों के पास ले जाएं। उन का हाल चाल पूछें। इस प्रकार उन की बातें सुन कर उन को भी भाषा आ जाएगी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया मैं जो आप को हिदायतें दे रहा हूं इस में सुस्ती न करें। नौजवान पढ़ी लिखी बच्चियां हैं इन को अपने साथ शामिल करें। और यहां की भाषा जानने वाली मेम्बरात को इन कामों में लगाएं।

सैक्रटरी सेहत जिस्मानी से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि लजना को हरकत में लाएं। खेलों के लिए स्थान लें अगर लजना का हाल है तो उन को टेबल टेनिस ख़िलवाएं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया प्रत्येक सैक्रेटरी का एक उद्देश्य होता है उस के फर्ज़ हैं। उस का नियमित काम करने के टाइम टेबल होना चाहिए। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी ज़ियाफत से उन काम के बारे में पूछा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रेटरी तजनीद ने डेनमार्क की लजना तथा नासरात की कुल तजनीद 239 बताई। इस तरह सैक्रेटरी इशाअत ने बाताया कि डेनमार्क में इशाअत का कोई विशेष काम नहीं हो रहा। केवल अगर कोई किताब आदि प्राप्त करनी हो तो वह प्राप्त की जाती है।

मुहासबा ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए फरमाया कि वह सैक्रटरी माल के साथ मिलकर रसीदों की जांच पड़ताल करती है।

सैक्रेटरी माल ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए फरमाया कि हमारा वार्षिक बजट 56 हज़ार करोंज़ है जब कि सालाना इज्तिमा का बजट 9 हज़ार करोंज़ है।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी तब्लीग़ को फ़रमाया यहाँ अरब भी हैं, सीरियन लोग भी हैं और पुराने लोग भी हैं। ईसटर्न यूरोप से आए हुए लोग भी हैं और फिर स्थानीय डेनिश भी हैं। इन सब लोगों में भी कार्यक्रम बनाएँ कैसे इन को तब्लीग़ कर सकते हैं। उनके साथ कैसे जुड़ें और संबंधों को बढ़ाया जा सकता है और संदेश उन्हें पहुंचाया जा सकता है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: "कोई इस प्रकार का विभाग या काम जो लजना के लाहे अमल में नहीं है तो सहायक सदर बना कर उस के ज़िम्मा कर दें।

छात्र संघ के बारे में हुज़ूर अनवर ने पूछा और फरमाया कि पढ़ी लिखी लड़कियों को जमा करें काम के लिए विभिन्न तरीके धारण करें। ख़ुद विभिन्न तरीकों को तलाश करें और उन्हें जमाअत से संलग्न करें।

सैक्रेटरी तब्लीग़ ने लजना द्वारा आयोजित खुले घर प्रबंधन का उल्लेख किया है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया : "उन को गाइड लाइन के लिए जिहाद के बारे में मेरे कई लेख मिल जाएंगे। अभी जो हाल में मैंने जो यू.के के शांति सम्मेलन में उल्लेख किया है। वर्तमान मुद्दे आपको इसी से मिल जाऐंग। मैंने कई प्रोफेसरों, रॉयटर्स इत्यादि के उद्धरण शामिल किए थे।

सैक्रेटरी शिक्षा से हुज़ूर अनवर ने पूछा: पाठ्यक्रम का पालन करने के लिए क्या काम हो रहा है? 239 लजना में से यदि 116 या 117 तक पाठ्यक्रम पहुंचा दें तो बहुत सफलता है। जिस पर सैक्रेटरी शिक्षा ने कहा कि वह सारी लजना को ई-मेल पर पाठ्यक्रम भिजवाती हैं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया, "आपको इस का फीड बैक भी आना चाहिए कि पढ़ा है या नहीं। आपको प्रत्येक से रिपोर्ट लेनी चाहिए। केवल भिजवाना पर्याप्त नहीं है। जब तक आप का प्रत्येक लजना की सदस्यों के साथ व्यक्तिगत संपर्क और संबंध न हो, यह ज्ञात नहीं होगा कि यह हमारी ओहदेदार हैं, यह हमारा प्रतिनिधि है। यदि यह अनुभव हो जाए कि आप प्रत्येक से सहानुभूति रखती हैं तो फिर संपर्क स्वयं बढ़ जाएगा।

हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फरमाया : "मुख्य बात यह है कि हर किसी को किश्ती नूह पढ़नी चाहिए, इस का डेनिश अनुवाद कर के सब को दें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि शिक्षा और तरबियत विभाग का काम है कि लड़कियों को हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा के बारे में बताएँ कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मसीह और महदी के साथ नबुव्वत का दावा भी है। तब्लीग़ की जाने वाली लड़कियों को बताएं कि किस प्रकार की नबुव्वत का दावा है।

हुज़ूर अनवर ने निर्देश देते हुए फरमाया कि, आपको अपने देश की जरूरतों के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार करना चाहिए और देखें कि किन बातों की आवश्यकता है। इस्लाम और अहमदियत की बुनियादी शिक्षा सिखाएं। इसके अलावा, हजरत अम्मा जान रज़ि अल्लाह की किताब का डेनिश भाषा में अनुवाद करवाएं। इस के अध्ययन से लड़कियों को पता चल जाएगा कि घरों में कैसे रहना है। विवाह कैसे बनाए रखें? बच्चों को कैसे प्रशिक्षित किया जाए और कैसे धैर्य और धीरज होना चाहिए।

वक्फे नौ विभाग के संदर्भ में, हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि वक्फे नौ का पाठ्यक्रम जमाअत के रूप में होगा। सहायक सदर बनाकर लड़कियों के जलसे करवाएं। अब तो 21 साल तक का सिलेबस आ गया है। माताऐं भी पढ़ें। सहायक सदर लजना अपने जलसा का प्रबन्ध सैक्रेटरी के माध्यम से करेंगे। लड़कियां, लड़कों में नहीं बैठेंगे।

मीटिंग के अंत में सदर लजना ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ सेवा में मस्जिद में लजना के लिए जगह की कमी को व्यक्त किया। जिस पर हुज़ूर अनवर ने निर्देश दिया कि आप लिख कर मुझे दें। और फरमाया कि सदर लजना मुझे सीधा अपनी रिपोर्ट भिजवाएं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: "उप-संगठन इस लिए बनाए गए हैं कि जमाअत का पहिया चलता रहे और तरक्की होती रहे। चारों पहिए चलते रहेंगे तो तरक्की होती रहेगा। अगर चारों क्षेत्र जमाअत की प्रणाली के साथ, लजना भी अंसार भी और ख़ुद्दाम भी मेहनती हों तो तरक्की बहुत बढ़ जाती है। राष्ट्रीय मज्लिस लजना इमाउल्लाह डेनमार्क की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ यह मीटिंग साढ़े सात बजे तक जारी रही।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 19 July 2018 Issue No. 29

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

ख़िलाफत की परिभाषा

कायनात के एक छोटे से कण ऐटम को लें या बड़े से बड़े किसी ग्रह को , जिसका भी सीना चाक करे वहाँ एक धड़कता हुआ दिल , एक केन्द्र पाएँगे जो इस कण या जिस्म की हरकत और सकून का आधार होगा। इसी तरह आलम सग़ीर हो या आलम कबीर हर जगह ख़ुदा तआला का यह क़ानून काम करता हुआ नज़र आता है। आलम सग़ीर अर्थात इन्सान के सारे अंगों के लिए दिल अगर एक मरकज़ के तौर पर है तो आलम कबीर अर्थात ब्रह्माण्ड का भी अपना एक मरकज़ है। कुछ ग्रह मिल कर अपना एक निज़ाम बनाते हैं जिनका केन्द्र सूरज होता है और इस किस्म के कुछ निज़ाम मिलकर एक ग्लेकसी बनाते हैं।

कायनात के छोटे से छोटे कण से ले कर ग्लेकसी तक में जो यह समरूपता पाई जाती है ,यह जहाँ हमें ख़ुदा तआला की तौहीद की तरफ़ ध्यान दिलाती है वहाँ इसमें मानव जाति की समाजी ज़िन्दगी के लिए भी एक शानदार सबक छुपा है कि दुनिया का कोई भी निज़ाम कोई भी कारोबार केन्द्र के बिना मुकम्मल नहीं हो सकता। समाज में मिल जुल कर रहने के लिए एक निज़ाम की ज़रूरत है जिसमें ऐसा मरकज़ होना चाहिए जिसे हर शख़्स अपने ऊपर लागू कर ले। जिसकी हर इताअत हर आदमी अपने लिए फर्ज़ ख़्याल करे, जिसकी हिफाज़त के लिए हर आदमी सारी शर्तों को पूरा करे। इसी पर मानव जाति की कामयाबी का आधार होगा और इस पर इसकी तरक्की की नींव होगी।

जहाँ तक इन्सान की कुदरत व अक्ल का सवाल है तो यह मुमकिन ही नहीं के वह एक ऐसा निज़ाम बनाए जो हर तरह से पूर्ण हो जिसमें हर एक के हकूक की सुरक्षा और हिफ़ाज़त का इन्तज़ाम हो। बेशक इन्सानों ने विभिन्न युगों में ऐसे कई निज़ाम बनाने की कोशिश की है जो इन के लिए लाभदायक और कामयाबी के ज़िम्मेदार हों। जैसे अरसतू का दार्शनिक निज़ाम , मनु का धर्म शास्त्रीय निज़ाम या फिर मौजूदा दौर में मारकिस का क्मयूनिजम का निज़ाम या फिर वर्तमान लोकतन्त्र का निज़ाम। लेकिन इन्सानी समाज अभी तक एक पूर्ण निज़ाम बनाने में असफल है। इसके मुकाबला में इन्सानी समाज में निज़ाम की ज़रूरत व अफ़ादियत का एहसास जारी है। दुनिया का हर क्षेत्र हर देश और हर कबीला इस बात पर गवाह है कि एक पूर्ण निज़ाम होना चाहिए। मानो निज़ाम का होना फितरत की आवाज़ है। लेकिन इन निज़ामों में आए दिन होने वाली गड़बड़ियां और तबदीलियाँ, होने वाले इंकलाबों और होने वाले फसादों के कारण इस बात पर भी यकीन बड़ता है कि ये हक़ीक़ी निज़ाम नहीं हैं। इनमें केन्द्र की वह प्राकृतिक रूह मौजूद नहीं है जो ख़ुदा तआला की व्यावहारिक गवाही के अनुसार हो। इसी लिए सब से अधिक दया करने वाले ख़ुदा तआला ने जो के दिलों के भेद जानने वाला है बन्दों की कमज़ोरी और कम अक्ली के पेश नज़र अपनी तरफ से रिसालत व नबुवत का सिलसिला जारी फरमाया। और नबियों के द्वारा वह निज़ाम कायम फरमाया जिस की आवश्यकता थी। जिस पर अनुकरण करना सफलता तथा कामयाबी की गारण्टी है। इसका सबसे उत्तम मार्ग हमारे हादी व मौला सरवरे कायनात हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा इस्लाम धर्म की शक्ल में ज़ाहिर हुआ है। जिसका कानून एक चिरस्थायी और पूर्ण किताब कुरान शरीफ की शक्ल में कयामत तक के लिए मौजूद है, जो फितरत इन्सानी के पूर्ण अनुसार है। यह निज़ाम , निज़ामे ख़िलाफत कहलाता है। जिसका बीजारोपण पहले ख़ुदा तआला के मामूर व मुरसिल के द्वारा होता है और उनकी वफात के बाद जिसका पोषण उनके ख़लीफा करते हैं और ये निज़ाम उस वक्त तक जारी रहता है जब तक लोग ईमान तथा नेक कर्म की पाबन्दी करते रहते हैं।

ख़िलाफत के शाब्दिक अर्थ

"ख़िलाफत" एक अरबी भाषा का शब्द है जिसके शाब्दिक अर्थ किसी का प्रतिनिधि बनना या किसी के पीछे आना या किसी का नायब होकर इसकी नयाबत के दायित्व पूर्ण करने के हैं। व्यवहार में ख़लीफा का शब्द दो अर्थों में इस्तेमाल होता है। अव्वल वह रबानी मुस्लेह(सुधारक) जो ख़ुदा की तरफ से दुनिया में किसी सुधार के काम के लिए मामूर के रूप में भेजा जाता है। अत: इन्ही शब्दों में सारे नबी और रसूल ख़लीफतुल्लाह होते हैं। क्योंकि वह ख़ुदा तआला के नायब होने की हैसीयत में काम करते हैं और ख़ुदा तआला की यह सुन्नत है कि वह ज़ुल्मत के घटा-टोप अंधेरों में अपने चुने हुए लोगों को नबुव्वत की चादर से सम्मानित करता है। इन नबियों के हिदायत रूपी वृक्ष बोया जाता है जो परवान चढ़ने लगता है। इन नबियों के द्वारा अल्लाह तआला की प्रथन कुदरत का ज़हूर होता है इसलिए व्यवहार में इन लोगों को ख़लीफतुल्लाह कहा जाता है। और इन्ही अर्थों में कुरआन शरीफ ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को ख़लीफा के नाम से याद किया है। यह स्थान वास्तव में अल्लाह तआला के हर नबी को प्रदान किया जाता है। द्वितीय वह चुना हुआ शख़्स जो किसी नबी या रूहानी सुधारक की वफात के बाद इसके काम को पूर्ण करने के लिए उसका प्रतिनिधि और इसकी जमात का इमाम बनता है जैसा के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत अबुबकर सद्दीक रज़ि अल्लाह तआला और हज़रत उमर रज़ि अल्लाह तआला ख़लीफा बने।

अलामा इब्ने असीर लिखते हैं :

اَلخَلِیفَۃُ مَنْ یَّقُوْمُ مَقَامَ الذَّاھِبِ وَیَسُدُّہٗ

(अन्निहाया जिल्द 1 पृष्ठ 315 उद्धरित रसाला अलफुरकान मई 1966 ई पृष्ठ 18)

कि ख़लीफा वह होता है जो किसी जाने वाले की जगह पर खड़ा हो और इसके जाने की वजह से पैदा होने वाले ख़ाली स्थान को पूर कर दे।

अल्लामा बैयज़ावी ने शब्द "ख़लीफा" के अर्थ बयान करते हुए अपनी तफसीर में लिखा है के :

اَلْخَلِیْفَتُ مَنْ یَّخْلِفُ خَیْرَہٗ وَیَنُوْبُ مَنَابَہٗ"

(तफसीर बैयज़ावी जिल्द 1 पृष्ठ 59 उद्धरित रसाला अलफुरकान मई 1966 ई पृष्ठ 19)

कि ख़लीफा वह है जो किसी दूसरे शख़्स के बाद आए और उसकी कायम मुकामी करे। और इसमें जो "ता" है वह मुबालग़ा (अतिश्योक्ति) के लिए है।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَیْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِیْلِ لَاَخَذْنَا مِنْہُ بِالْیَمِیْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْہُ الْوَتِیْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad